

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जुलाई 2024

अंक 454 ● जुलाई 2024

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹50

1

शिवकुमार गांधी
चित्र: नीलेश गहलोत

धूप-छाँव



अक्लमन्द कौआ बिल्ली से बोला—
तौल-तौलकर देख लो, दो किलो धूप है एक किलो छाँव
कभी दो किलो छाँव तो कभी एक किलो धूप।
कबूतर ने दो सौ ग्राम धूप में पंख फैलाए, गौरैया पचास ग्राम छाँव में सुस्ताई।
गिलहरी बोली— पाँच-पाँच सौ ग्राम धूप-छाँव बिन मैं तो न रहूँगी।
पेड़ बोला— अरे! अब रहने दो यह किलो-विलो
यह दुनियादारी कहीं और चलाओ
बस धूप को आने दो, मुझमें रह-रहकर छनने दो, छाँव को बनने दो।



इस बार

अंक 454 • जुलाई 2024

चकमक

■ धूप-छाँव - शिवकुमार गांधी	2
■ रेसी भी एक ईद - रुबीना खान	4
■ हाथी एक-दूसरे को नाम-सरीखी... माइकिल पार्दो	8
■ गप्पियों की गप्प - दुर्व	11
■ भूलभुलैया	12
■ कविता डायरी - 7 - मेंढक बोला - सुशील शुक्ल	13
■ तुम भी बनाओ - स्क्विज़ी मछली - प्रभाकर डबराल	16
■ दावत-ए-भ्राम - नीना भट्ट	18
■ क्यों-क्यों	20
■ मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 3	
■ - आर एस रेश्म राज, ए पी माधवन व साथी	24
■ कला के आयाम - शेफाली जैन	26



■ मेंढक का पत्र - प्रभात	30
■ माथापच्ची	32
■ चित्रपहेली	34
■ मेरा पत्रा	36
■ तुम भी जानो	43
■ भ्राम बने मेरे खास! - रोहन चक्रवर्ती	44



आवरण चित्र: ऋषि साहनी

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

डिजाइन

कनक शशि

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

वितरण

इनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

ऐसी भी एक ईद

रुबीना खान
चित्र: ऋषि साहनी

रमज़ान के बाद ईद का आना कुछ ऐसा लगता है जैसे पूरे माह के सब्र का फल सेवइयों की मिठास के साथ मिल गया हो। उन्तीसवें रोज़े के आगाज़ से ईद के बारीक चाँद को देखने का बेसब्री से इन्तज़ार रहता है। बच्चों की खुशी इस दिन चरम पर होती है। इस दौरान कभी चाँद दिख जाता है, तो कई दफा तीसवें रोज़े पर ही दिखता है। अक्सर यह बातें कानों से होकर गुज़रती रहती हैं कि 30 रोज़े होने पर बाज़ार के लोग खासकर दर्ज़ी खुश हो जाते हैं। और हों भी क्यों ना उन्हें एक दिन और जो मिल जाता है अपने कामों के लिए।

बहरहाल चाँद दिखने के साथ ही तोप (पटाखे) फूटने की आवाज़ें आनी शुरू हो जाती हैं। फिर दुआएँ माँगने और सलाम करने का सिलसिला शुरू हो जाता है। ईद के पहले की यह रात जाने कितनी ही रौनकों से सजी होती है। चाँद दिखते ही घरों पर पहले से की हुई रंग-रोगन की चमक में इज़ाफा हो जाता है। इसकी खास वजह पर्दे, चादरें और सजावटी सामान होता है। कई लोग इस रात में ही खरीददारी के लिए जाना पसन्द करते हैं। सारी रात बाज़ार रौशनी से सरोबार होते हैं। ‘चाँद मुबारक’, ‘ईद मुबारक’ का दौर भी चलता रहता है।

ईद की सुबह की शुरुआत सलाम करने से होती है। शीरखुर्मी, सेवइयाँ, छोले, दही बड़े जैसे कई पकवानों से घर महकता रहता है। रात भर के रोज़े को सुबह शीरखुर्मी, छुआरे से पूरे परिवार के साथ खोला जाता है। नए कपड़े पहनने, नमाज़ पढ़ने के बाद बारी आती है ईदी की जो हमें घर के बड़े-बुजुर्गों से पैसे, तोहफे की शकल में मिलती है। बच्चों के लिए यह ईद का सबसे खास हिस्सा होता

है। वे बार-बार ईदी के पैसों को गिनते हुए अपने दोस्तों को बताते हैं कि अब इतने पैसे हो गए — इन पैसों से मेला घूमने, झूले झूलने, चीज़ें खरीदने जाएँगे। तीन दिन तक ईद का सिलसिला जारी रहता है। हर ईद अपने साथ कई प्यारी-सी यादें दे जाती हैं। ईद के ऐसे ही कुछ चुनिन्दा यादगार किस्सों का ज़िक्र कर रही हूँ।

बचपन में एक बार हम कुछ दोस्तों ने अपने ईदी के पैसों से तरह-तरह की चीज़ें खाने और मज़े करने का प्लान बनाया। हम घर के पास ईद पर लगे मेले में गए। झूला झूलने, गुड़िया के बाल, आइसक्रीम खाने के बाद पानीपूरी खाने की बारी थी। हमने सोचा हम इसे घर ले जाकर मज़े-से खाएँगे। जैसे ही हम थोड़ा आगे बढ़े साइकिल से आता एक लड़का हमारी दोस्त के हाथ में लटकी पानी की फ़नी से टकरा गया और सारा पानी ज़मीन पर बिखर गया। हमारे मुँह में पानीपूरी के नाम से आने वाला पानी भी तब तक सूख गया था और सारा ज़ायका जैसे कहीं गायब हो गया था। अब पैसे भी नहीं थे कि और पानी ले लें। इससे पहले कि हम उस लड़के को ज़्यादा कुछ बोल पाते वह वहाँ से भाग गया। खैर, घर लौटकर हम सबने सूखी पानीपूरी ही खाई।

ऐसे ही एक बार की ईद में हम चाँद रात को खरीददारी करने गए। सोचा सबसे अलग कपड़े, सैंडिल हमारे पास होंगे। सुबह नए कपड़े पहनकर, तैयार होकर जैसे ही सैंडिल पहनीं तो देखा दोनों अलग-अलग रंग की थीं। यह देखते ही चेहरा मायूस हो गया। पर अब कर भी क्या सकते थे। बाज़ार भी बन्द हो गया था। और ऐसी सैंडिल



पहनकर जाना सबका मनोरंजन करने जैसा होता। बहरहाल अम्मी ने घर पर रखी नई स्लीपर हमें पहनने को दी। उसे ही बेमन से पहनकर दोस्तों के साथ घूमने चले गए।

ऐसा ही एक वाकिया एक अन्य ईद पर हुआ। हमने नए कपड़े सिलवाए जो ईद की सुबह ही हमें मिले। जब हमने उन्हें पहना तो घर पर सब उसे देखकर हँसने लगे। हमें समझ ही नहीं आ रहा था कि ये सब क्यों हँस रहे हैं। तब अम्मी ने बताया कि कुर्ते का पीछे वाला हिस्सा उलटा सिल गया है। पूरा मूड खराब हो गया था। हमने

गुस्से में उन कपड़ों को बदल लिया। थोड़े-से पुराने कपड़ों के साथ यह ईद मुकम्मल हुई। अगला किस्सा उस ईद का है जब ईदी की जगह घर के सब बच्चों को प्यारी-सी गुल्लक मिली, जिसमें ईदी के पैसे भी थे। हमने सभी से ईदी के पैसे गुल्लक में ही लिए। इस तरह हर रोज़ हमारे इस छोटे-से बैंक में बचत होने लगी।

ऐसे हँसते-मुस्कराते कई किस्से ईद पर बनते रहे। पर सोचा ही नहीं था एक ईद ज़िन्दगी के अलग ही तजुर्बे दे जाएगी। मई 2020, कोरोनाकाल के वक्त की बात है। हमारी नानी दाढ़ की तकलीफ

की वजह से काफी मुश्किल दौर से गुज़र रही थीं। वे हमारे बगलवाले घर में ही रहती थीं। उस वक्त इलाज की दिक्कत हो रही थी। धीरे-धीरे नानी का खाना-पीना भी न के बराबर हो गया। ऐसे में नानी काफी कमज़ोर भी हो गईं। घर के सभी लोग इस जद्दोजहद में थे कि कैसे उन्हें इस तकलीफ से राहत मिले। इस बीच एक बार ही उन्हें सरकारी अस्पताल लेकर गए। वहाँ उन्हें कुछ दवाइयाँ दी गईं और कोरोना की जाँच के बाद उन्हें घर पर ले आए।

ग्यारहवें रोज़े की रात हम सब सहरी कर रहे थे। यह वह वक्त था जब नानी हमेशा के लिए हम सबसे दूर हो गईं। सबके लिए यह वक्त बेहद तकलीफदेह रहा। घर की बुजुर्ग और हम सबकी अजीज़ अब हमारे साथ नहीं थीं। कोरोनाकाल के नियम का पालन करते हुए हमने सिर्फ घर व मोहल्ले के कुछ लोगों के बीच ही नानी को इस दुनिया से विदाई दी।

तीन दिन बाद खबर मिली कि नानी का नाम कोरोना पेशेंट की फेहरिस्त में आ गया था। तीसरे दिन रोज़ा इफ्तार के वक्त क्वारंटाइन सेंटर से लोग हमें लेने आ गए। हम सभी को यह डर था कि वहाँ क्या होगा। पहले ही काफी बुरी खबरें सुनने को मिल रही थीं। अब तक हमारे पड़ोस के उन 4 परिवारों को भी हमारे साथ ले जाने की बात हो गई थी जो जनाज़े में शरीक हुए थे। जहाँगीराबाद, जो उस वक्त भोपाल शहर के हॉटस्पॉट के रूप में सामने आ रहा था, के एक

निजी स्कूल में हम सबको ठहराया गया। न तो वहाँ किसी तरह की साफ-सफाई थी और न ही पानी, खाने की ठीक व्यवस्था। ऊपर से गरमी का मौसम बेहाल कर रहा था। ऐसे में रोज़े में यहाँ वक्त गुज़ारना और दूभर हो रहा था। बाहर जा नहीं सकते थे और स्कूल के अन्दर कोई आ नहीं सकता था।


ऐसे में सुबह की सहरी और शाम का इफ्तार करना बेहद मुश्किल हो रहा था। इस दौरान हम सबका तीन बार कोरोना टेस्ट हुआ जिसके लिए हम सब चौराहे तक गए। जाँच टीम के कुछ लोगों ने हमारी तस्वीरें भी लीं। हर दिन, हर रात कमरे की खिड़की से नज़र आते सुनसान रास्तों को देखकर गुज़रती।

इस बीच चाँद रात का दिन भी आ ही गया। हमने क्वारंटाइन सेंटर से ही ईद का चाँद देखा। यह पहली ईद थी जब हम सब ने सुबह के वक्त न तो नए कपड़े पहने और न ही शीरखुर्मा, सेवइयाँ बनाई गईं। सबने मायूस चेहरे के साथ दबी आवाज़ में एक-दूसरे को ईद की मुबारकबाद दी। नमाज़ पढ़ी।

ये सब चल ही रहा था कि एक और बुरी खबर हमारा इन्तज़ार कर रही थी। हमारे परिवार से दो और लोगों की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। कुछ ही वक्त में उन्हें हमीदिया अस्पताल ले जाया गया। हम सबका रो-रोकर बुरा हाल था। सोलहवें दिन हमें हमारे घर लाया गया जो पूरी तरह से बिखरा हुआ था। न चाहते हुए भी यह ईद हर बार याद आ जाती है।

अब तक हमारे पड़ोस के उन 4 परिवारों को भी हमारे साथ ले जाने की बात हो गई थी जो जनाज़े में शरीक हुए थे। जहाँगीराबाद, जो उस वक्त भोपाल शहर के हॉटस्पॉट के रूप में सामने आ रहा था, के एक निजी स्कूल में हम सबको ठहराया गया। न तो वहाँ किसी तरह की साफ-सफाई थी और न ही पानी, खाने की ठीक व्यवस्था। ऊपर से गरमी का मौसम बेहाल कर रहा था। ऐसे में रोज़े में यहाँ वक्त गुज़ारना और दूभर हो रहा था। बाहर जा नहीं सकते थे और स्कूल के अन्दर कोई आ नहीं सकता था।





हाथी एक-दूसरे को नाम-सरीखी आवाज़ों से पुकारते हैं

माइकिल पार्दो

अनुवाद: विनता विश्वनाथन और कविता तिवारी

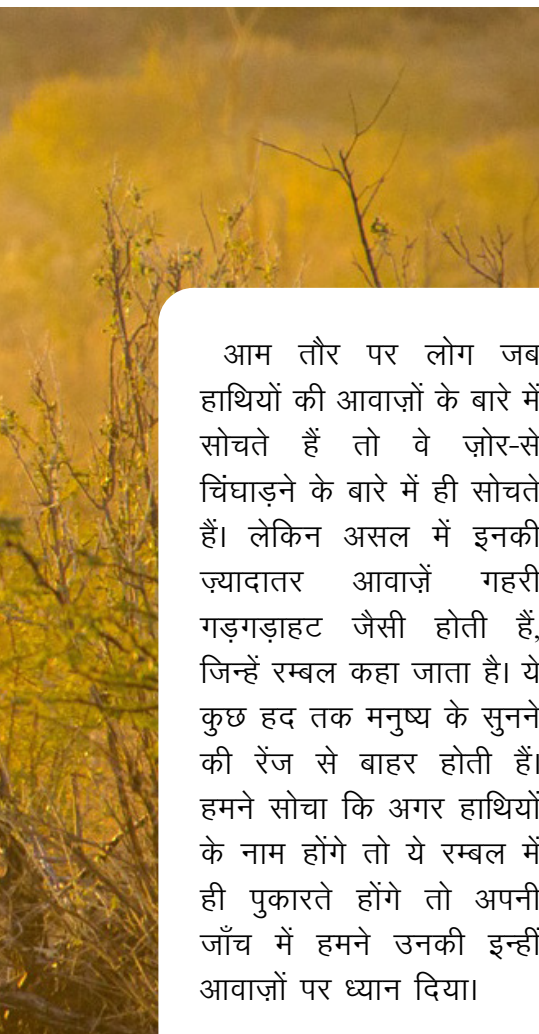
नाम में क्या रखा है? लोग एक-दूसरे को पुकारने के लिए अनोखे नाम इस्तेमाल करते हैं। लेकिन हम उन मुट्ठी भर जानवरों में से एक हैं जो ऐसा करने के लिए जाने जाते हैं। नामों वाले अन्य जानवरों को ढूँढना और यह जाँचना कि वे उनका इस्तेमाल कैसे करते हैं, वैज्ञानिकों की दूसरे जानवरों के बारे में समझ को बेहतर बना सकता है।

मैं एक हाथी शोधकर्ता हूँ और हमारे समूह ने वर्षों से जंगली इलाकों के हाथियों का अवलोकन किया है। हम सब जंगली हाथियों को अलग-अलग शख्स के रूप में जानते हैं। और हम उनके लिए ऐसे नाम बनाते हैं जो हमें ये याद रखने में मदद करते हैं कि कौन कौन है। ये हाथी उनके लिए हमारे रखे गए नामों से अनजान हैं।

हाल ही में हमें इस बात का सबूत मिला कि हाथियों के नाम हैं और वे एक-दूसरे को इन नामों से पुकारते हैं।

सबूत इकट्ठा करना

हमें लम्बे समय से सन्देह था कि हाथी एक-दूसरे को नाम-जैसी आवाज़ों से पुकारते हैं। लेकिन सबूत के तौर पर हमारे पास कुछ नहीं था और ना ही किसी और ने इस बात का परीक्षण किया था। तो पहले हमने हाथियों का कैमरु देश के सवाना (कम पेड़ों वाले घास के मैदान) में पीछा किया और उनकी आवाज़ों की रिकॉर्डिंग की। जहाँ मुमकिन था हमने इस बात को दर्ज किया कि किसने किसको सम्बोधित किया।



आम तौर पर लोग जब हाथियों की आवाज़ों के बारे में सोचते हैं तो वे ज़ोर-से चिंघाड़ने के बारे में ही सोचते हैं। लेकिन असल में इनकी ज़्यादातर आवाज़ें गहरी गड़गड़ाहट जैसी होती हैं, जिन्हें रम्बल कहा जाता है। ये कुछ हद तक मनुष्य के सुनने की रेंज से बाहर होती हैं। हमने सोचा कि अगर हाथियों के नाम होंगे तो ये रम्बल में ही पुकारते होंगे तो अपनी जाँच में हमने उनकी इन्हीं आवाज़ों पर ध्यान दिया।

हमारा तर्क था कि अगर उनके रम्बल में नाम-सरीखी कोई चीज़ है तो उनके रम्बल के गुणों के आधार पर हमें यह पता चल जाना चाहिए कि वो आवाज़ या रम्बल किसके लिए है। हमने इस जाँच के लिए एक ऐसे मॉडल का इस्तेमाल किया जिसे प्रशिक्षण देकर हम इस बात का पता लगा सकते थे। मॉडल को हम जब कम्प्यूटर प्रोग्राम में परिवर्तित करते हैं तो वह हमें वास्तविक दुनिया को समझने में मदद करता है; मॉडल का प्रोग्राम डाटा के आधार पर भविष्यवाणी भी करता है।

मॉडल का उपयोग: कैसे और क्यों?

हमने इस मॉडल के प्रोग्राम में संख्याओं की एक श्रृंखला डाली। इन संख्याओं के ज़रिए मॉडल को हाथियों की हर आवाज़ के गुणों के बारे में बताया गया। और यह भी बताया गया कि हर आवाज़ में कौन-से हाथी को सम्बोधित किया जा रहा था। इस तरह मॉडल यह सीखने लगा कि किस तरह की आवाज़ें किस हाथी से जुड़ी थीं। फिर हमने मॉडल का इस्तेमाल किया यह पता करने के लिए कि कुछ अन्य आवाज़ें किन हाथियों के लिए थीं। कुल मिलाकर हमने 99 अलग-अलग हाथियों की 437 आवाज़ों का इस प्रक्रिया में इस्तेमाल किया।

इस तरह की प्रक्रिया (मशीन लर्निंग) इस्तेमाल करने का एक कारण यह है कि रम्बल कई किस्म के सन्देश पहुँचा सकते हैं, जैसे कि आवाज़ निकालने वाले हाथी की पहचान, उम्र, लिंग, भावनात्मक स्थिति और व्यवहार का सन्दर्भ। शायद हाथी के नाम इन रम्बल का एक छोटा हिस्सा हों। ऐसे सूक्ष्म व जटिल पैटर्न को पकड़ने में कम्प्यूटर मॉडल अक्सर मनुष्य के कानों से बेहतर होते हैं।

हमने ये नहीं सोचा था कि हाथी अपनी हर आवाज़ में नामों का इस्तेमाल करेंगे। लेकिन हमारे पास पहले से यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि कौन-सी आवाज़ों में नाम होंगे। इसलिए हमने अपने शोध में वो सारे रम्बल लिए जिनमें हमने सोचा कि कोई नाम हो सकता है।

हमारे इस मॉडल ने लगभग एक चौथाई रम्बल के लिए उस हाथी को पहचाना जिसे उस रम्बल में सम्बोधित किया गया था। इससे यह संकेत मिलता है कि कई रम्बल में इतनी जानकारी तो थी कि मॉडल उन हाथियों को पहचान पाया जिनके लिए ये रम्बल थे। साथ ही हमने ये भी पता किया कि एक हाथी द्वारा एक खास साथी के लिए निकाली गई आवाज़ें ज़्यादा समान होती हैं, बनिस्पत उन आवाज़ों के जो वह हाथी किसी अन्य हाथी के लिए निकालता है। यानी कि खास हाथियों के लिए खास आवाज़ें होती हैं जो नाम जैसी होती हैं।

अब हम यह जानना चाहते थे कि क्या सुननेवाले हाथी अपने नामों को पहचान सकते थे और जवाब दे सकते थे। इस जाँच के

लिए हमने 17 हाथियों को वो आवाज़ें सुनाईं जिनमें हमारे हिसाब से उन्हें पुकारा जा रहा था और जिनमें उनके नाम थे। फिर किसी और दिन हमने आवाज़ निकालने वाले उसी हाथी की किसी अन्य हाथी के लिए निकाली गई आवाज़ भी उन्हें सुनाई। ऐसा करने पर कुछ हाथियों ने जवाब दिया। हाथियों ने तब ज़्यादा जल्दी जवाब दिया और आवाज़ के स्रोत के करीब भी आए जब वो आवाज़ खास उनके लिए थी। इससे हमें पता चला कि सन्दर्भ के बिना आवाज़ सुनने पर भी हाथी यह पहचान पा रहे थे कि वह आवाज़ उनके लिए थी या नहीं।

नकल किए बिना नाम

हाथी ही एकमात्र ऐसे जानवर नहीं हैं जिनकी नाम जैसी आवाज़ें होती हैं। बॉटलनोज़ डॉल्फिन और कुछ तोते जब दूसरों से मिलते हैं तो खुद अनोखी आवाज़ निकालते हैं। उनके साथी इन आवाज़ों की नकल करके उन्हें पुकारते हैं। ये एक अनोखा 'कॉल साइन' (परिचय संकेत) है जिसका इस्तेमाल वे आम तौर पर अपनी पहचान बताने के लिए करते हैं।

नकल के ज़रिए नाम रखने की यह प्रणाली, नाम और दूसरे शब्दों के मानव भाषा में काम

करने के तरीके से थोड़ी अलग है। हालाँकि हम कभी-कभी चीज़ों को उनके द्वारा निकाली जाने वाली आवाज़ों के आधार पर नाम देते हैं, जैसे कि 'चिड़िया' और 'झींगुर'। लेकिन हमारे ज़्यादातर शब्द मनमाने होते हैं। उनका उन वस्तुओं द्वारा उत्पन्न की जाने वाली ध्वनियों से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता है। मनमाने शब्द हमें कई तरह के विषयों पर बात करने की अनुमति देते हैं, जिसमें ऐसी वस्तुएँ और विचार शामिल हैं जो कोई आवाज़ नहीं करते।

दिलचस्प बात यह है कि हमने पाया कि किसी खास हाथी को पुकारने के लिए किए जाने वाले एक हाथी के रम्बल दूसरे हाथियों के लिए किए जाने वाले रम्बल से ज़्यादा मिलते-जुलते नहीं थे। यानी कि इन्सानों की तरह, लेकिन दूसरे जानवरों से अलग, हाथी भी सम्बोधित किए जाने वाले हाथी की आवाज़ की नकल किए बिना एक-दूसरे को पुकार सकते हैं।

हमारा यह शोध हाथियों को इस तरह से एक-दूसरे को पुकारने वाली बहुत कम प्रजातियों में से एक बनाता है। और हमारे नतीजे वैज्ञानिकों की जानवरों की बुद्धिमत्ता और भाषा के विकास की समझ बढ़ा सकते हैं।



यह लेख ऑनलाइन पत्रिका *दि कन्वर्सेशन* में 11 जून, 2024 को छपे लेख पर आधारित है। मूल अंग्रेज़ी लेख तुम यहाँ पढ़ सकते हो: <https://theconversation.com/african-elephants-address-one-another-with-name-like-calls-similar-to-humans-232096>





गप्पियों की गप्प

दुर्व

चित्र: ईशा गोस्वामी

एक दिन मैं, मेरा दोस्त नैतिक और अमन गप्पे लड़ा रहे थे। नैतिक ने कहा, “चलो आज अपनी-अपनी गलती की कहानी साझा करते हैं। देखते हैं किसको, कैसी और किससे सज़ा मिली। और क्या सबक मिला।” सब राज़ी हो गए।

अमन ने अपनी गलती की कहानी शुरू की। उसने कहा, “मैं एक दिन साइकिल चला रहा था। ज़ोर-ज़ोर से साइकिल भगा रहा था। सरस (मेरा मित्र) ने मुझे खबरदार किया भी था, ‘अरे! धीरे... गिर जाएगा..!’ पर मैंने अनसुना कर दिया और धड़ाम-से गिर गया। चोट बहुत आई। दवाखाना, इंजेक्शन, कड़वी दवाइयाँ, दर्द ये सब तो मिला ही, इनाम में डॉट और मार पड़ी सो अलगा”

ये सुनकर हम सब ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। फिर नैतिक ने अपनी कहानी शुरू की।

उसने कहा, “मैं एक दिन दरवाज़े पर बैठकर केले खा रहा था। माँ ने कहा, ‘छिलका आँगन में मत फेंक, कोई फिसल जाएगा।’ मैंने अनसुना कर दिया। थोड़ी देर बाद जब मैं खेलने के लिए बाहर जाने लगा तो मैं ही उस छिलके पर पैर फिसलने से गिर पड़ा।” ये सुनकर हम सब फिर से ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

अब बारी मेरी थी। लेकिन अब मेरी भी इज़ज़त की बैण्ड बजेगी, मुझ पर भी सब हँसेंगे, ये सोचकर मैंने अपनी कहानी बताई ही नहीं। और बातें अधूरी छोड़कर घर लौट आया।

शायद मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

मैंक





सुशील शुक्ल

चित्र: कनक शशि




मेंढक बोला

राकेश रंजन

टीचर बोले नाम बताओ
मेंढक बोला टर टर टर
टीचर बोले पढ़ो ककहरा
मेंढक बोला टर टर टर
टीचर बोले पढ़ो ठीक-से
मेंढक बोला टर टर टर
टीचर बोले बुढ़ू हो क्या
मेंढक बोला टर टर टर
टीचर बोले निकलो बाहर
मेंढक बोला टर टर टर
टीचर बोले चुप हो जाओ
मेंढक बोला टर टर टर

यह कविता मुझे इसलिए भी खींचती है कि इसमें किसी जीव का स्वभाव बचाकर रखा गया है। इससे रचना में भी स्वाभाविकता आती है। स्वाभाविकता से रचना जीवन्त हो उठती है। 'मुर्गी माँ घर से निकली' जैसी रचनाएँ इसीलिए याद रखे जाने लायक हैं। निरंकारदेव सेवक की इस कविता के बारे में कुछ बातें फरवरी अंक में प्रकाशित कविता डायरी में हमने कर ली हैं। मसलन, 'मुर्गी माँ' में मुर्गी और माँ दोनों हैं। कवि ने इन्सानी माँ की भावुकता से उसे बखूबी बचा लिया है। उसे त्याग और बलिदान के हाइवे पे चले जाने से रोक लिया है। उसके समानान्तर एक पगडण्डी बनाई है। कविता का काम भाषा में और कहन में और बात में पगडण्डियाँ बनाए बिना चलता भी कहाँ है! मसलन, इस कविता के 'चें चें चें' शब्द को कवि अनसुना नहीं करता। वह सुनता



है। अपनी भाषा में उसे खोलता है। यह कविता तमाम अनसुनी आवाजों को ठहरकर सुनने और उसे अपनी भाषा में खोलकर समझने का मौका भी बनाती है।

‘मेंढक बोला’ कविता में भी मेंढक का स्वभाव कवि ने सहेजे रखा है। इस कविता में कवि ने ‘टर टर टर’ का अनुवाद नहीं किया है। उसने पाठकों पर छोड़ा है कि वे इसका अनुवाद अपने हिसाब से करें। ऐसी ही एक कविता है ‘आमी आज कनाई मास्टर’।

रवीन्द्रनाथ की इस कविता में एक बच्चा अपने मास्टर का स्वांग कर रहा है।

वह एक छड़ी लेकर बैठा है और अपने घर की बिल्ली के बच्चों को पढ़ा रहा है।

माँ उससे पूछती है कि तुम ये क्या कर रहे हो, तो वह कहता है कि—

एक बिल्ली का बच्चा देर से आता है और इनमें से किसी का पढ़ने में दिल नहीं लगता है।

मैं इन्हें वर्णमाला पढ़ाता हूँ और ये हमेशा ‘म्याऊँ-म्याऊँ’ कहते हैं।

महाकवि निराला ने एक लेख में रवीन्द्रनाथ की इस कविता पर विचार किया है।

इस कविता का शीर्षक ‘मेंढक बोला’ ही काफी कुछ कहता है। शीर्षक एक तरह से शुरू में ही साफ कर देता है कि इस कविता में मेंढक बोल रहा है।

एक मेंढक किसी स्कूली कक्षा में आ गया है। इस स्कूल का टीचर एक आम टीचर है। ज़ाहिर है कोई नया दिखेगा तो वह उससे उसका नाम पूछेगा। उसे पता है कि जो भी स्कूल आया है उसे पढ़कर ही जाना है। पढ़ने की तरह पढ़ना

है। परीक्षा भी देनी है। इस तरह से नहीं पढ़ने से वह बुद्धू करार दिया जाएगा। वह जवाब नहीं देगा तो उसे बाहर किया जा सकता है। उसे चुप कराया जा सकता है। शिक्षक के इस तरह के बर्ताव आम तौर पर आपत्तिजनक नहीं माने जाते हैं।

शिक्षक नाम पूछ रहा है। शिक्षक ‘क ख ग’ पढ़ने को कह रहा है। कि शिक्षक कह रहा है कि बुद्धू हो क्या? कुल मिलाकर इस कविता का शिक्षक एक लगभग ज़िम्मेदार शिक्षक है। उसकी चिन्ता है कि बच्चे पढ़ने आते हैं और उसे पढ़ाना है। वह अपने बँधेबँधाए काम में खो गया है। कक्षा में आए मेंढक को भी वह अपना छात्र मान लेता है। अब ज़रा मेंढक पर विचार करो। उसकी सारी ही ज़िन्दगी, उसकी भाषा, उसके भाषा के सारे अर्थ, सब कुछ ‘टर टर टर’ पर ही टिका है। वह जो कहेगा ‘टर टर टर’ से कहेगा। शिक्षक उसका नाम पूछते हैं। वह शायद अपना नाम भी बता रहा हो। मगर शिक्षक के पास इस भाषा में उतरने और मेंढक की तरफ से सोचने का अवकाश नहीं है। (अक्सर शिक्षक को पढ़ाने के अलावा कई सारे कामों में झोंक दिया जाता है।) शिक्षक के मन में यह बात बैठी हुई है कि पढ़ने आने वाले को उनकी भाषा समझनी है। स्कूल में नाम पूछने का मतलब भी नाम जानना नहीं होता है। नाम पूछने का मतलब हाज़िरी लगाना होता है। जब मैं एक शहरी स्कूल में पढ़ने आया तो मुझे वहाँ अटैण्डेंस लेने के तरीके पर हैरत हुई। हमारे गाँव में शिक्षक हाज़िरी रजिस्टर उठाते थे और एक नज़र देखकर पूछते थे— कमला नहीं आई? या विमल नहीं आया? उसके आस-पड़ोस में रहने वाला बच्चा बता देता था कि वे क्यों नहीं आए। कभी-कभार शिक्षक कह देते थे कि फलों के पिता को बोल देना कि मुझसे आकर मिल लें। बस हो गई हाज़िरी। शिक्षक हम



सबको जानते थे। यह काम कितना अजीब है कि आपके सामने कोई बैठा है और आप जान रहे हैं कि बैठा है फिर भी आप उसका नाम पुकारेंगे और फिर वह कहेगा कि— यस सर। तब जाकर आपको पता चलेगा कि वह आया है।...

ये जो मेंढक है उसमें वह उत्साह और हैरत अभी है। वह किसी पोखर से आया है। खुली हवा से। खुले पानी से। खुले आसमान से। उसके पास टीचर के सवाल का जवाब है।

नाम क्या है... शायद वह बता रहा है। मगर शिक्षक नहीं समझ रहे। शिक्षक तो उसे सुन ही नहीं रहे हैं। शिक्षक यह भी नहीं समझ रहे हैं कि उनके सवाल के बाद वह हर बार कुछ बोलता है। उन्हें लगता है कि वह जो भी बोलता है एक-सा है। 'टर टर टर' है। वह कुछ अगड़म-बगड़म बोल रहा है। और उन्होंने शायद यह भी पढ़ रखा है कि इस कुदरत में सबसे इंटेलीजेंट प्राणी इन्सान ही है। बाकी सब तो 'टर टर टर' या 'म्याऊँ-म्याऊँ' करते रहते हैं। उनको भाषा हासिल नहीं है।

इस कविता का मेंढक मुझे कक्षा में बैठे अनगिनत बच्चों के मन की तरह लगता है। जिनका मन यहाँ-वहाँ उछलकूद करता फिरता है। करता फिरना चाहता है। जो यहाँ रहते हैं तो उन्हें लगता है कि उन्हें वहाँ होना चाहिए। यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ की एक अनवरत उछलकूद में रत। ऐसे मेंढक मन वाले बच्चों के लिए किसी कक्षा में कितनी जगह है? उनकी भाषा शिक्षक तक नहीं पहुँच रही है। उनका जीवन, मन कुछ भी शिक्षक तक नहीं पहुँच रहा है। पूरे समय एकतरफा संवाद चलता है। और उसी संवाद में किसी को बुद्ध बना दिया जाता है, किसी को बाहर किया जाता है, किसी को चुप किया जाता है। कुछ ककहरे को याद कर लेते हैं। और वही इस कक्षा की शान बनाए रखते हैं। बाकी सबके रास्ते उनके जैसे बनने, उनकी दिशा में चलने की लालसा से भर दिए जाते हैं। यह अनुभव

कितना आम है कि किसी हिन्दी माध्यम के स्कूल में कोरकू या बैगा या मालवी या बुन्देली या ब्रज या भोजपुरी बोलने वाले की जुबान बन्द रहती है।

इन सबके मेंढक मन की तरह एक मेंढक आज टीचर की मेज़ पर आकर बैठ गया है। उसका सामना आज शिक्षक से है। वह उनके हर सवाल का जवाब दे रहा है। शिक्षक कहते हैं कि पढ़ो। वह 'टर टर टर' कहता है। क्या पता शायद कहना चाहता है कि ककहरा पढ़कर मैं क्या करूँगा। पोखर में या ज़मीन में या मेरे जीवन में यह किस काम आएगा? मगर शिक्षक तक उसकी बात पहुँच नहीं पाती है। सिर्फ पहुँचता है 'टर टर टर'। सवाल दर सवाल बात बिगड़ती जाती है और आखिरकार जब शिक्षक उससे कहते हैं कि बाहर निकलो...तो वह बाहर नहीं निकलता। वह डटा रहता है। इसके बाद भी कविता उसे शिक्षक से सामना करने के लिए मुस्तैद रखती है। शिक्षक लगभग हारकर कहते हैं कि चुप हो जाओ...मेंढक चुप नहीं होता है। वह फिर कहता है— 'टर टर टर'।

हम कितनी कम भाषा जानते हैं। चींटियों, कुत्तों, बिल्लियों से लेकर परिन्दों तक। जिनकी भाषा समझ नहीं आती है उन्हें थोड़ा बहुत शायद कल्पना से सुना जा सकता है।



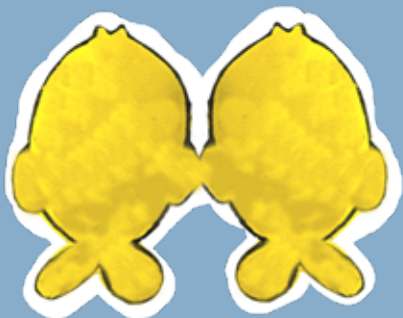
तुम्हीओ बनीओ

प्रभाकर डबराल

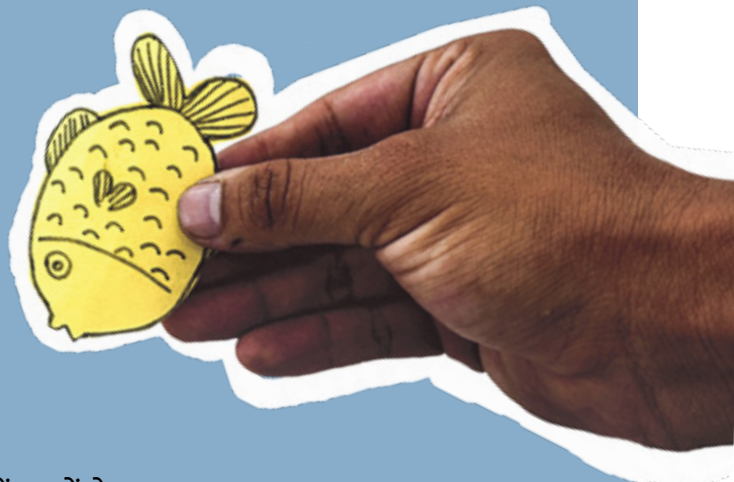
स्क्विजी मछली



जुगाड़: ओरिगेमी कागज़, कैंची,
स्केच पैन, गुब्बारा और सेलो टेप



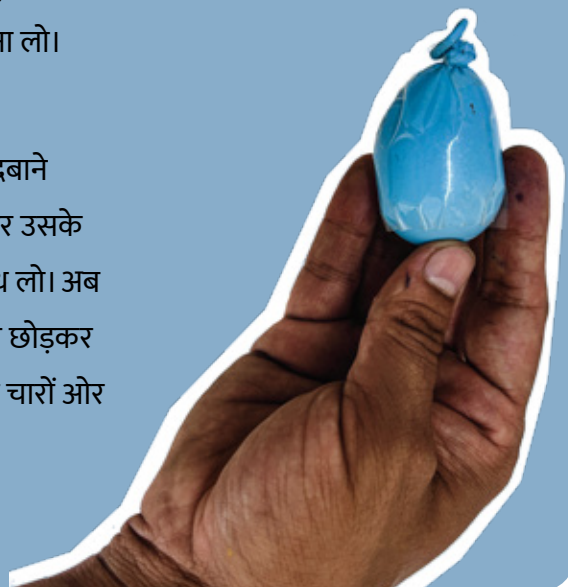
1. ओरिगेमी कागज़ को बीच से मोड़कर
मछली के दो कटआउट बना लो।



2. स्केच पैन से उन दोनों टुकड़ों के
एक तरफ मछली का चित्र बना लो।



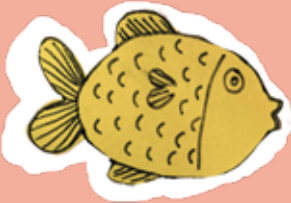
3. एक गुब्बारे को दबाने
लायक फुलाओ और उसके
पिछले सिरे को बाँध लो। अब
शुरुआती हिस्से को छोड़कर
बाकी पूरे गुब्बारे के चारों ओर
सेलो टेप लपेट लो।



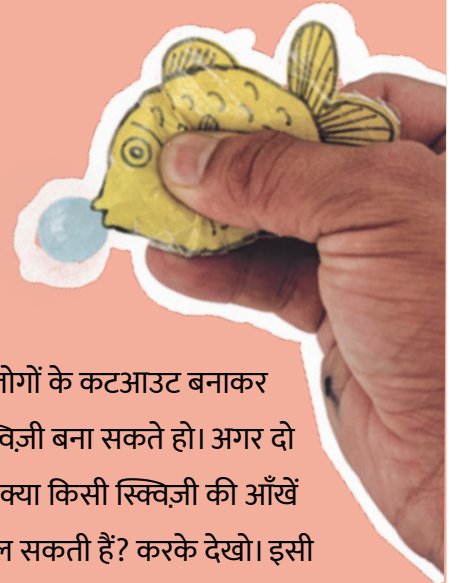


4. एक कटआउट के सामने के हिस्से पर टेप का बड़ा टुकड़ा चिपकाओ। इसमें कई सारे कट लगा लो।
5. गुब्बारे को मछली के कटआउट के अन्दर रखो।

6. अब दूसरे कटआउट को गुब्बारे के ऊपर रखो और कटे हुए टेप को इस कटआउट के ऊपर चिपका लो।



बस हो गई तुम्हारी स्क्विजी मछली तैयार। जब तुम मछली को अपनी उँगलियों से दबाओगे तो उसके मुँह से बुलबुला निकलेगा।



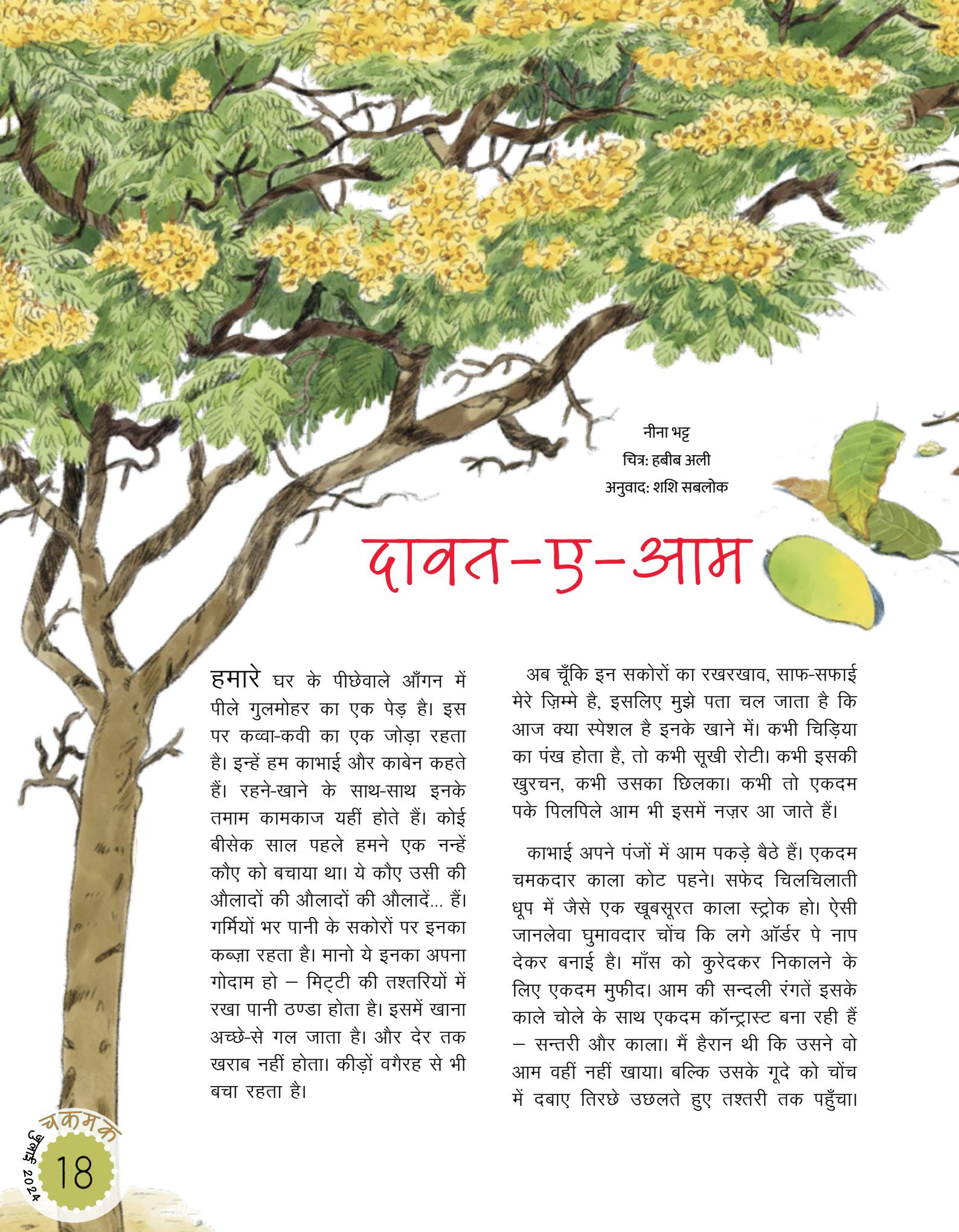
अलग-अलग जानवरों/लोगों के कटआउट बनाकर तुम इसी तरह उनके स्क्विजी बना सकते हो। अगर दो गुब्बारे इस्तेमाल करें तो क्या किसी स्क्विजी की आँखें भी इस तरह बाहर निकल सकती हैं? करके देखो। इसी तरह के कुछ और छोटे-छोटे बदलाव करके देखो कि स्क्विजी को और मजेदार कैसे बना सकते हैं। तुम जो भी बनाओ उसकी फोटो हमें जरूर भेजना।

मक

कामक

17

जुलाई 2024



नीना भट्ट

चित्र: हबीब अली

अनुवाद: शशि सबलोक

दावत-पु-आम

हमारे घर के पीछेवाले आँगन में पीले गुलमोहर का एक पेड़ है। इस पर कव्वा-कवी का एक जोड़ा रहता है। इन्हें हम काभाई और काबेन कहते हैं। रहने-खाने के साथ-साथ इनके तमाम कामकाज यहीं होते हैं। कोई बीसेक साल पहले हमने एक नन्हें कौए को बचाया था। ये कौए उसी की औलादों की औलादों की औलादें... हैं। गर्मियों भर पानी के सकोरों पर इनका कब्ज़ा रहता है। मानो ये इनका अपना गोदाम हो — मिट्टी की तश्तरियों में रखा पानी ठण्डा होता है। इसमें खाना अच्छे-से गल जाता है। और देर तक खराब नहीं होता। कीड़ों वगैरह से भी बचा रहता है।

अब चूँकि इन सकोरों का रखरखाव, साफ-सफाई मेरे ज़िम्मे है, इसलिए मुझे पता चल जाता है कि आज क्या स्पेशल है इनके खाने में। कभी चिड़िया का पंख होता है, तो कभी सूखी रोटी। कभी इसकी खुरचन, कभी उसका छिलका। कभी तो एकदम पके पिलपिले आम भी इसमें नज़र आ जाते हैं।

काभाई अपने पंजों में आम पकड़े बैठे हैं। एकदम चमकदार काला कोट पहने। सफेद चिलचिलाती धूप में जैसे एक खूबसूरत काला स्ट्रोक हो। ऐसी जानलेवा घुमावदार चोंच कि लगे ऑर्डर पे नाप देकर बनाई है। माँस को कुरेदकर निकालने के लिए एकदम मुफीद। आम की सन्दली रंगतें इसके काले चोले के साथ एकदम कॉन्ट्रास्ट बना रही हैं — सन्तरी और काला। मैं हैरान थी कि उसने वो आम वहीं नहीं खाया। बल्कि उसके गूदे को चोंच में दबाए तिरछे उछलते हुए तश्तरी तक पहुँचा।



और उस पिलपिले गूदे को पानी में डाल दिया। फिर लगा घोटने-मिलाने। काबेन दुबककर आई। अपने चमकदार काले चोंगे में दमकती। और तिरछी निगाहों से अपने साथी को निहारने लगी।

काभाई ने चोंच भर गुदगुदा गूदा निकाला और काबेन के हलक में उड़ेल दिया। आम रस। गुजराती इसे बड़े शौक से खाते हैं। बड़ी खास डिश है यह उनकी। और प्रेम मापने का एक पैमाना भी है। अगर किसी शाह, पटेल या परमार ने आपको दोपहर के खाने में रस-पूड़ी परोसी है तो जान लीजिए कि आप उनके खासम खास हैं। इस रस में चुटकी भर सौंठ पाउडर और चम्मच भर देसी घी मिला दिया जाता है। इससे हाज़मा बना रहता है। और जो भी कम-ज़्यादा हो उसे बराबर कर दिया जाता है। काभाई ने अपनी आम की डिश में हाज़मे को बेहतर बनाने के लिए क्या डाला होगा? कैसे पूछूँ?

हमारी रसोई में शृंगार रस का एक अलग ही खेला चल रहा है। खाने की मेज़ पर ढेर सारे कटोरे, थालियाँ रखी हैं। कोई ऐसा बरतन नहीं जिसके किनारों पर चिपचिपा पीला रस न चिपका हो। “आज खाने में है आम का रसीला रस” पापा ने ऐलान किया। “मैं थोड़े और पानी में गुठली को रगड़-रगड़कर रस का आखिरी कतरा तक निचोड़

लूँगा। सबको परम आनन्द प्राप्त होगा, यह मेरी गारंटी है।” अपनी पसन्दीदा चीज़ औरों के साथ बाँटना कितना सुखकर है। साथ का सुख है इसमें। साझे का सुख। पर पापा को कौन बताए कि इस पूरी कवायद में रसोई किसी क्राइमसीन टाइप लग रही है। जहाँ गुनाह के सबूतों को छिपाए जाने की हर मुमकिन कोशिश जारी है।

इसकी शुरुआत हुई इस साल आम की बम्पर खेप के साथ। हमारा बरसों पुराना पेड़ आमों से पूरी तरह लद गया। शायद यह अच्छी बारिश का कमाल था। बन्दरों, चिड़ियों, चमगादड़ों के रेले के रेले आने लगे। दिन भर उनकी दावत चलती। जो उनसे बचे रह गए उन आमों को तोड़कर हमने घर में पकाने को रख दिया।

एक कमरे में बस आम ही आम थे। भूसे से घर गन्धाने लगा था। हर दूसरे दिन मैं झोला भर आम दोस्तों, रिश्तेदारों को देने शहर में निकल जाती। पर आज पहली बार पता चला कि कौआ परिवार भी आम रस की दावत उड़ा रहा है। किस खूबसूरती से, किस सलीके से, किस हुनरमन्दी से... वल्लाह!



यह लेख पहले राउंडग्लास सस्टेन की वेबसाइट पर अंग्रेज़ी में प्रकाशित हो चुका है।
<https://roundglasssustain.com/>

मक

कमक

19

जुलाई 2024



मई अंक के 'क्यों-क्यों' कॉलम में हिमांशी सती के नाम से छपा
जवाब असल में मध्य प्रदेश के सागर ज़िले के गढ़पहरा में महार
रेजिमेंट पब्लिक स्कूल की पाँचवीं कक्षा की छात्रा जोया खान का था।

श्रावणी सन्दीप पाटिल, दसवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु



चित्र: द्युति, चौथी, फातिमा स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

अंशु, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

[illegible]

जब मैं बाहर खेलने जाता हूँ तो सब गाड़ियाँ आती हैं तो खेल नहीं पाता हूँ। और मैं पार्क जाता हूँ तो झूल नहीं पाता हूँ। जब सोता हूँ तो मामा मुझे ठण्डा पानी डालते हैं। मैं उठ जाता हूँ।

यह सब बातें मैं चिट्ठी से भेजूँगा।

अनिकेत, तीसरी, स्वतंत्र तालीम, आशियाना सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हम बच्चे अपने परिवार वालों के साथ या स्कूल की मैडम या सर के साथ मिलकर नाटक/वीडियो बनाकर अपनी बात संसद तक पहुँचा सकते हैं।

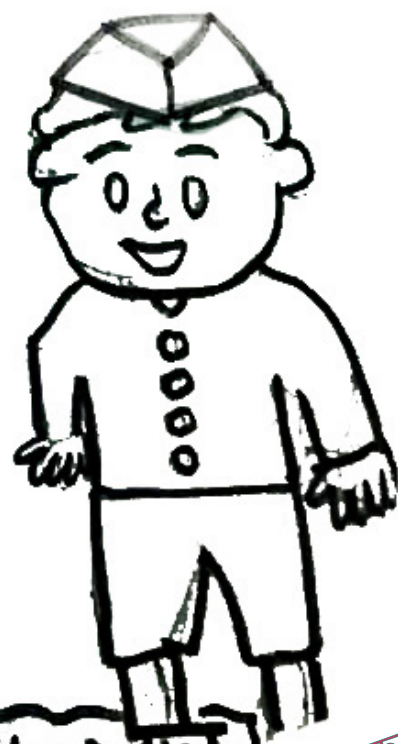
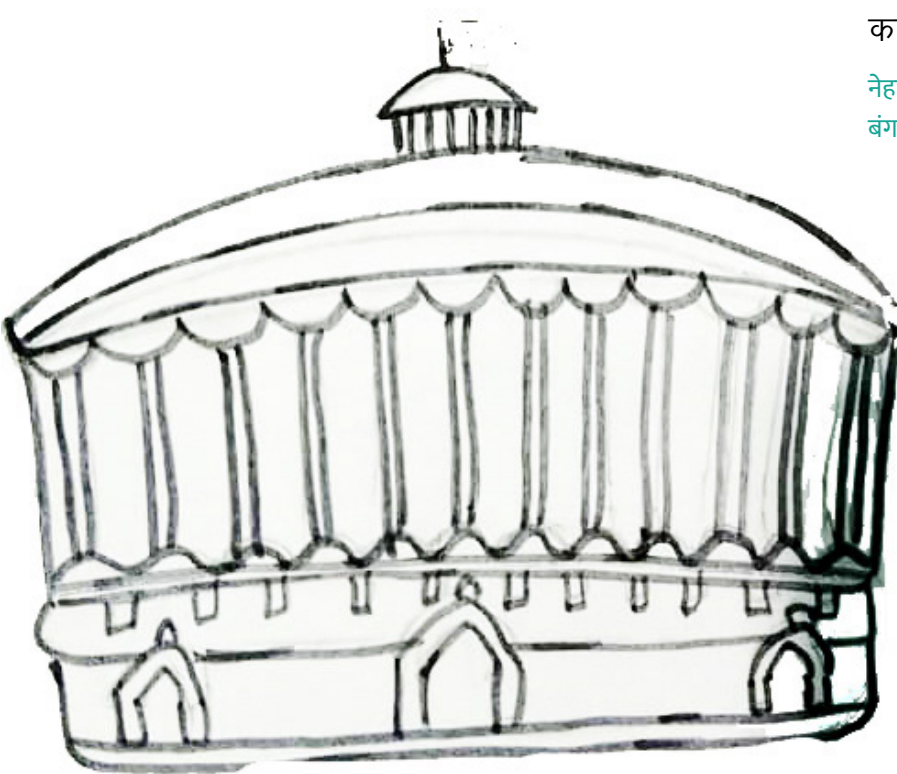
भूमिका परिहार, सातवीं, शासकीय शाला, छावनी पठार रीडिंग रूम,
भोपाल, मध्य प्रदेश

कक्षा छह में पढ़ने वाला बच्चा जानता है कि वो किसे वोट दे सकता है। ईवीएम में नोटा की तरह एक बटन बच्चों के लिए भी हो। चाहे मतगणना में वोट गिना मत जाए।

अनुभव चमोली, नौवीं, केंद्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

बच्चों के लिए एक हेल्पलाइन नम्बर होना चाहिए, ताकि यदि बच्चों को कोई शिकायत करनी हो तो वो उस नम्बर पर फोन लगाकर शिकायत कर सकें। होना ये चाहिए कि शिकायत पूरी तरह हल होनी चाहिए और हर बच्चे की शिकायत का हल निकलना चाहिए।

नेहा जाटव, आठवीं, चकमक क्लब, ग्राम तरावली,
बंगरसिया, भोपाल, मध्य प्रदेश



सांसद भवन

चित्र: राधिका, आठवीं, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

Radhika VIII

[illegible]

भाग - 3

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

आर एस रेश्म राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा,
अनीता वर्गीस और अंकिता जे हिरेमथ

रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए
आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...



कुरी

वैज्ञानिक नाम: बाइडेंस पाइलोसा
(*Bidens pilosa*)

मूल: दक्षिण अमेरिका

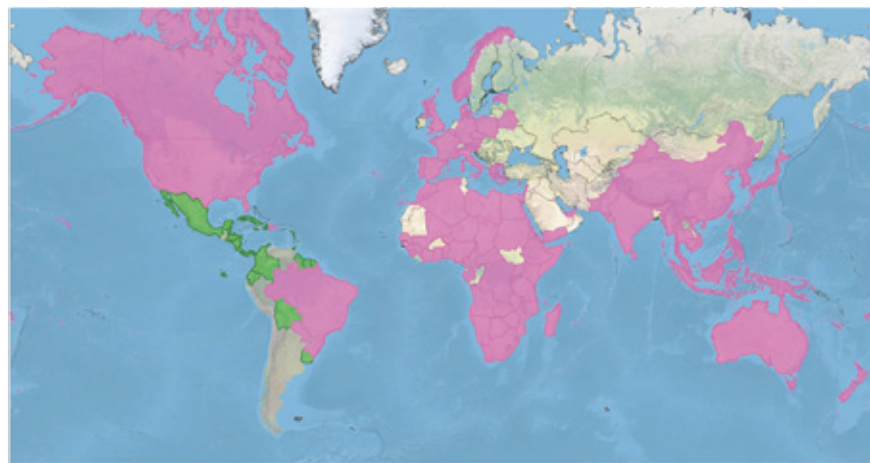
कैसे पहुँचा: नहीं पता

अँग्रेज़ी में स्पैनिश नीडल कहलाने वाला यह छोटा पौधा एक ही साल जीता है। हर साल इसके नए पौधे उगते हैं। ये 60 से 90 सेंटीमीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसके तने लाल-से होते हैं। इसकी पत्तियाँ एक-दूसरे के सामने जोड़ियों में पाई जाती हैं। हर सरल पत्ती (सिम्पल लीफ) तीन (या कभी-कभी पाँच) हिस्सों में बँटी होती है और इनके सिरे दाँतेदार होते हैं।

कुरी अक्टूबर से अप्रैल के बीच फूलते हैं। फूलों का बीच का हिस्सा पीला होता है जो 5-6 सफेद पंखुड़ियों से घिरा होता है। इसका एक पौधा 6000 तक बीज पैदा कर सकता है। इसके बीज हवा और पानी से फैलते हैं और ये लोगों व अन्य जानवरों के कपड़ों या बालों पर भी चिपक जाते हैं। कुरी जुती हुई मिट्टी में या ऐसी खुली जगहों में जल्दी बढ़ता है, जहाँ पहले के पेड़-पौधों-जानवरों को कुछ हद तक या पूरी तरह नष्ट कर दिया गया हो। इसके घने कुंज रास्तों और रेलवे पटरियों के किनारे दिख जाते हैं।

असर

कुरी बहुत ही तेज़ी-से बढ़ता है और इसके घने कुंज बन जाते हैं जो फसल की जगह लेते जाते हैं। कुछ देशों में इसे एक अहम खरपतवार करार दिया गया है। इसके कारण फसल की पैदावार कम होती है। कुरी के एलीलोपैथिक असर भी होते हैं यानी कि ये कुछ ऐसे रसायन उत्पन्न करता है जो अन्य पौधों के अंकुरित होने, बढ़ने-फूलने में दिक्कत पैदा करते हैं। इस तरह आसपास के पौधों पर इसका नकारात्मक असर पड़ता है।



प्रवेश

स्वाभाविक

मूल जानकारी नहीं दर्ज



बन्दोबस्त

गाजर घास से उत्पन्न होने वाला रसायन पार्थेनिन कुरी की वृद्धि और विकास में रुकावट डालता है। इसलिए पार्थेनिन का शाकनाशी के रूप में इस्तेमाल हो सकता है। डाइयूरॉन, ब्रोमासिल और 2, 4-D जैसे शाकनाशकों का भी अन्य देशों में इस्तेमाल हुआ है। हाथ से या फिर घास काटने की मशीन से कुरी को हटाना इसके नियंत्रण का काफी असरदार उपाय है। कुरी को फूलने और बीजों को पैदा करने से रोकने का यह अच्छा तरीका है।



कमक

25

जुलाई 2024

कला के आयाम

शहर के अनदेखे चेहरे

शेफाली जैन

“तुम जहाँ रहते हो, उस जगह से तुम्हारा क्या रिश्ता है?” यह सवाल अगर किसी चित्रकार से पूछा जाए तो शायद हमें इसके जवाब उसकी रचनाओं में मिल जाएँ। क्या तुमने कभी अपने इस रिश्ते को चित्रों में, लेख में, गीत में या फिर नाटक में तब्दील करने की कोशिश की है?

अक्सर हम जहाँ बहुत सालों से रहते आए हैं, वह जगह हमारे लिए आदत-सी बन जाती है। और जिन चीज़ों के हम आदी हो जाते हैं, उन पर हमारा ध्यान कम होता जाता है। पर कई चित्रकारों और लेखकों ने उस जगह के बारे में कला के माध्यम से काफी कुछ सोचा और विचारा है, जहाँ वे बसे हैं। शायद उनकी कला ने उन्हें उनके शहर/जंगल/गाँव के प्रति उदासीन नहीं होने दिया। आज हम ऐसी ही एक चित्रकार से मुलाकात करेंगे। हम उनकी कला की कुछ झलकियों से उनके शहर को थोड़ा-सा जानने की कोशिश करेंगे।

कृपा मुम्बई में रहने वाली एक कलाकार हैं। वे अक्सर कला के माध्यम से अपने शहर मुम्बई की बड़ी दिलचस्प और बारीक छानबीन करती हैं। मुम्बई को कौन नहीं जानता! इतना बड़ा महानगर, भारत की बिज़नेस कैपिटल, बॉलीवुड के सितारों की नगरी, गेटवे ऑफ इंडिया, मरीन ड्राइव वगैरह-वगैरह। चलो इस विशाल और चमकीले शहर को हम कृपा की नज़र से देखें।

करीब 2002 में कृपा ने एक पहल शुरू की जिसे उन्होंने ‘मैपिंग मुम्बई’ का नाम दिया। इसके तहत उन्होंने तय किया कि वे मुम्बई के कुछ ऐसे इलाकों में जाएँगी, जिनका ज़िक्र मुम्बई की



चित्र 1. ‘मैपिंग मुम्बई’ सीरीज़ से वॉटरकलर स्केच, चित्रकार: कृपा

चमकीली छवि में कम नज़र आता है। उन्होंने यह भी तय किया कि वे इन इलाकों में पैदल घूमेंगी। वे चाहती थीं कि इन उपेक्षित इलाकों के बारे में जानें और इस जानकारी को हमारे साथ साझा करें। हम क्यों इन्हें नज़रअन्दाज़ करते हैं? यहाँ कौन लोग बसते हैं? हम एक-दूसरे से कैसे जुड़े हैं?

शहर में पैदल यात्रा

तुम पूछोगे पैदल क्यों? पैदल चलते हुए हमें चीज़ों को करीब से और इत्मीनान से देखने का मौका मिलता है। हम जब मन चाहे रुककर चीज़ों को समय दे सकते हैं। शायद चलते-चलते थक जाने पर हम नीम्बू सोडा पीने बैठ जाएँ। बैठे-बैठे हमारा कोई नया दोस्त बन जाए जो हमें उस जगह के बारे में कुछ बताए। शायद हम किसी सँकरी गली में घुस जाएँ और अनायास ही शहर का कोई अनदेखा पहलू सामने आ जाए।



चित्र 2. 'मैपिंग मुम्बई' सीरीज़ से वॉटरकलर स्केच, चित्रकार: कृपा

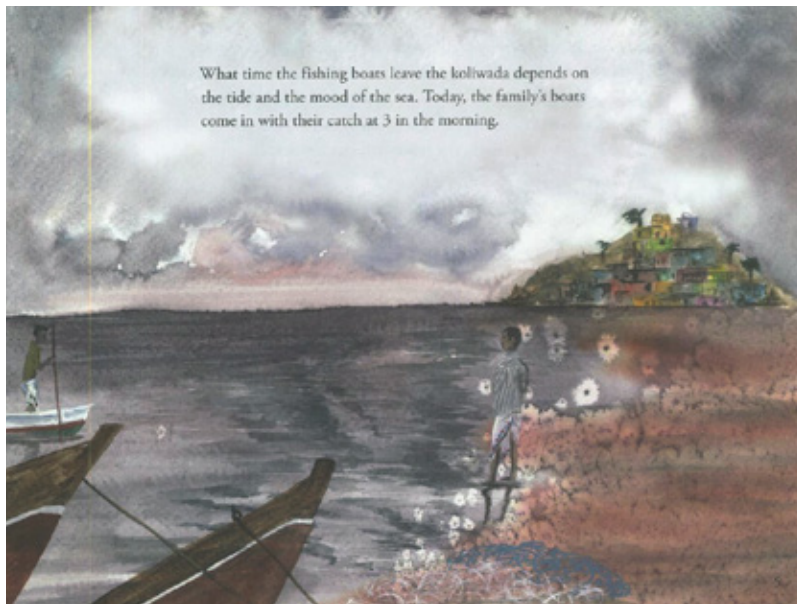
ये जो अनगिनत मौके पैदल यात्रा से मिल सकते हैं, वे गाड़ी में बैठकर घूमने से नहीं मिल सकते हैं। इसलिए शायद कृपा के लिए पैदल घूमना काफी मायने रखता है। वे पैदल सफर करते वक्त अपनी स्केचबुक, वॉटरकलर और कैमरा साथ रखती हैं। फिर वे वहीं बैठकर चित्र बनाती हैं या उस जगह के फोटो खींचकर घर पर इन्हें चित्रों में तब्दील करती हैं। कृपा ने भिण्डी बाज़ार, हाज़ी अली, क्रॉफोर्ड मार्केट के ऐसे बहुत सारे दिलचस्प चित्र बनाए हैं (चित्र 1 व 2)।

'मैपिंग मुम्बई' के दौरान कृपा एक संस्था से जुड़ी जिसका नाम है 'द पीपल प्लेस प्रोजेक्ट'। इस प्रोजेक्ट का मकसद कृपा के 'मैपिंग मुम्बई' के मकसद से मिलता-जुलता है — शहर की अनसुनी कहानियों को बाहर लाना। आम लोग और उन विभिन्न समुदायों के लोगों की कहानियों को सामने

लाना, जिनकी मेहनत-मज़दूरी पर शहर खड़े हैं। कृपा अपनी लेखिका दोस्त फ्लर डी'सूज़ा के साथ मिलकर इस प्रोजेक्ट से जुड़ीं। फिर उन्होंने मुम्बई के उत्तन, गोरई, वर्सोवा, खार डण्डा और वर्ली कोलीवाड़ा में जाना शुरू किया।

कोली मछुआरों के एक समुदाय का नाम है और वाड़ा यानी जहाँ लोग बसते हैं। कृपा कोलीवाड़ा में समय बिताने लगीं। वहाँ के लोगों से बातचीत करने लगीं। वर्ली कोलीवाड़ा में एक 82 वर्षीय बुजुर्ग काटकर काका से उनकी दोस्ती हुई। काटकर काका कोली समुदाय से आते हैं। उन्होंने कृपा को बताया कि कोलीवाड़ा के लोग मुम्बई के सबसे पुराने निवासी हैं। काटकर काका के पिता और दादा ने ब्रिटिश राज के समय मुम्बई की पहली सड़कें, सीवेज सिस्टम, पुल आदि बनाए। इस समुदाय ने और लश्कर (दक्षिण एशियाई मज़दूरों को अँग्रेज़ लश्कर कहते थे), पठान, चीनी, मराठा और ईसाई समुदाय के लोगों ने मिलकर मेहनत और कौशल से मुम्बई के पहले बन्दरगाह बनाए और बड़े-बड़े जहाज़ भी।

मुम्बई में कोली समुदाय बहुत सारे क्षेत्रों में समुद्री तट पर बसा था और आज भी बसा है। लेकिन शहरी प्रदूषण (जो इन वाड़ों की खाड़ियों के रास्ते समुद्र में बहा दिया जाता है), ग्लोबल वार्मिंग, अत्यधिक मच्छीमारी और शहरी विकास योजनाओं के तहत इन वाड़ों के अस्तित्व पर खतरा बढ़ता जा रहा है। आजकल कई लोग इन वाड़ों को अवैध झुग्गी-झोपड़ी ठहराकर ज़मीन हड़पने की होड़ में हैं। ऐसे में कृपा और अन्य कलाकार या कलाकार समुदाय (जैसे पराग काशीनाथ टंडेल और अरवानी आर्ट प्रोजेक्ट) कोलीवाड़ा के साथ जुड़कर उसकी वर्तमान स्थिति और इतिहास के बारे में लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे हैं। कोलीवाड़ा पर बच्चों के लिए प्रकाशित तीन बहुत सुन्दर चित्रकथाओं के चित्र कृपा ने बनाए हैं। ये हैं *लॉस्ट एंड फाउंड*



चित्र 3. बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स का एक चित्र, चित्रकार: कृपा, लेखक: फ्लर डी'सूज़ा, प्रकाशक: प्रथम बुक्स

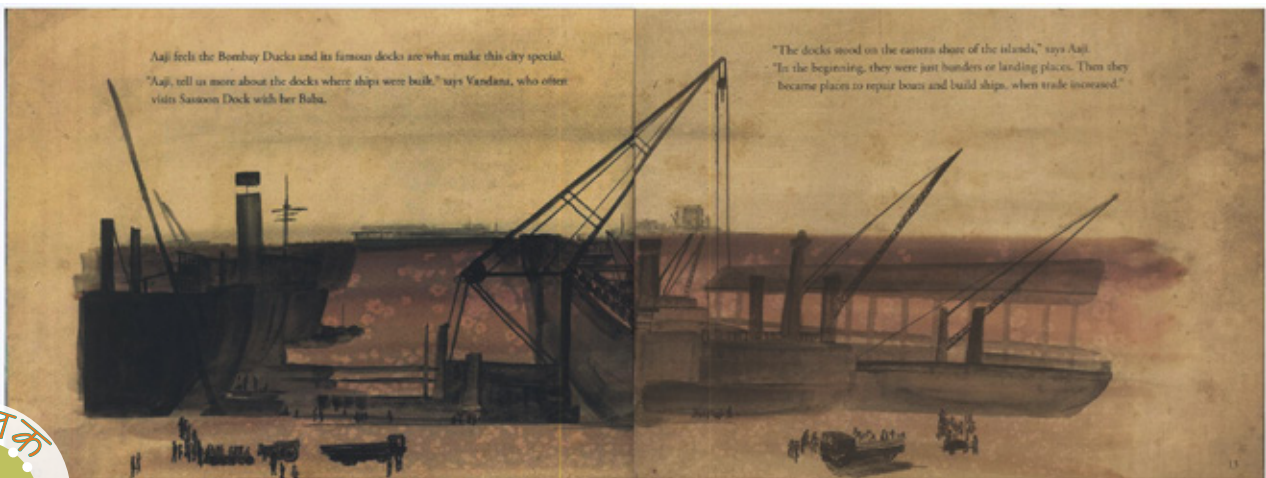
इन ए मुम्बई कोलीवाड़ा, मीरा'स विलेज बाय दी सी (जादुई मीरा – हिन्दी) और बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स। ये कृपा की कोलीवाड़ा में की गई कई पैदल यात्राओं और शोध के सुन्दर और संवेदनशील नतीजे हैं। बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स में कृपा द्वारा बनाए गए चित्र तुम चित्र 3 व 4 में देख सकते हो।

जैसे हमने देखा, कृपा का इन किताबों को बनाने का सफर पैदल शोध यात्रा से शुरू होता है। कोलीवाड़ा की पहली-पहली छाप उनके स्केचेज़ में मिलती है। फिर जब कोली समुदाय से बातचीत होती है तब उनके चित्रों में वो भी सामने आता है जो आँखों के सामने नहीं पर कोलीवाड़ा के इतिहास में है, उसकी कहानियों में है। और

इसके अलावा भी बहुत कुछ सामने आता है, जैसे मुम्बई के पुराने बन्दरगाह, वहाँ के पुराने जहाज़ और पुराना नक्शा जो अब काफी बदल चुका है, कोली समुदाय की वर्तमान दिनचर्या (मछली पकड़ने का समय जो समुद्री ज्वार-भाटे पर निर्भर है), वहाँ पाए जाने वाले खास समुद्री जीव— जैसे रेतीले तटों पर स्टार फिश, सी एनीमोन, पॉर्पिता पॉर्पिता (नीला बटन), पुर्तगाली मैन ऑफ वॉर और पथरीले तटों पर केकड़े, झींगे, बार्नेकल और मस्सल, वहाँ के लोगों के लगातार बढ़ते मुम्बई शहर के प्रति विचार, वहाँ के बच्चों की ज़िन्दगी वगैरह।

चित्रकार और प्रयोगात्मक शोध

तो यह साफ ज़ाहिर है कि चित्रकार होना कृपा के लिए केवल किसी नई जगह को ढूँढ़कर उसे सुन्दर रंगों और रूपों में ढालना नहीं है। जगह केवल पेड़, पहाड़, बिल्डिंग, समुद्र से नहीं, बल्कि वहाँ रहते लोगों, जानवरों, वहाँ सुनाई कहानियों और वहाँ घटी घटनाओं से भी बनती है। इन सब चीज़ों को अपने चित्रों में लाने के लिए कृपा लगातार कुछ ऐसे कलात्मक तरीके (जैसे पैदल घूमना, लोगों से बातचीत करना आदि) खोजती और अपनाती हैं जिससे जगह अपने अलग-अलग पहलू उनके सामने खोले। चित्रकार यहाँ एक शोधकर्ता भी है जो एक संवेदनशील चित्र बनाने के लिए खास तैयारी करती है।



चित्र 4. बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स का एक चित्र, चित्रकार: कृपा, लेखक: फ्लर डी'सूज़ा, प्रकाशक: प्रथम बुक्स

एक अमेरिकी कलाकार एड्रियन पाइपर ने इस विषय को लेकर 60 और 70 के दशक में कुछ अनोखे प्रयोग किए। वे अश्वेत समुदाय (ब्लैक कम्युनिटी) से आती हैं। अमेरिका में ब्लैक होना और फिर एक ब्लैक औरत होना, दोनों ही भेदभाव और उत्पीड़न के चलते उन्हें सार्वजनिक जगहों पर सुरक्षित महसूस नहीं करने देता था। तो एक दिन वे एफ्रो विग लगाकर ब्लैक आदमी का भेष पहनकर सार्वजनिक जगहों पर घूमीं! वे देखना चाहती थीं कि शहर उनके बदले हुए अस्तित्व के सामने क्या चेहरा दिखाएगा? क्या यह चेहरा अलग होगा? क्या आदमी दिखने के कारण वे उन जगहों पर आसानी से जा पाएँगी जहाँ एक औरत नहीं जा सकती? पर एक ब्लैक आदमी को शहर कैसे देखता, अपनाता या ठुकराता है? अगर वे एक श्वेत आदमी या औरत बनकर घूमतीं तो क्या शहर उन्हें ज़्यादा अपनाता?

तुम भी ऐसे कुछ प्रयोग आजमा सकते हो। अपने गाँव/शहर/कस्बे की कोई अनजान जगह चुनो और वहाँ पैदल घूमकर आओ। अपने साथ अपनी स्केचबुक ले जाना मत भूलना! वहाँ स्केचिंग करते वक्त लोग ज़रूर रुककर तुम्हें देखने लगेंगे। यही मौका है उनसे दो बातें करने का और उनके इलाके के बारे में उनसे और गहराई में जानने का! कृपा बताती हैं कि एक लड़की होने के कारण कभी-कभी अनजान इलाकों में अकेले घूमना मुश्किल हो जाता है। अगर अकेले जाना तुम्हारे लिए मुनासिब या सहज नहीं, तो किसी साथी के संग जाओ।

कृपा ने भी एक ऐसा प्रयोग किया। एक दिन वे बुर्का पहनकर मुम्बई शहर घूमीं। कृपा मुस्लिम धर्म समुदाय से नहीं हैं। वे कहती हैं कि उस दिन बुर्का पहनकर उन्हें पहली बार

महसूस हुआ कि चूँकि उनका चेहरा ढँका हुआ है, इसलिए वे ज़्यादा इत्मीनान से सब को देख पा रही थीं। उन्हें चिन्ता नहीं थी कि उन्हें कोई घूर रहा है क्योंकि उनका चेहरा सबसे छुपा था। उन्हें एक खास तरह की स्वतंत्रता का एहसास हुआ। ये प्रयोग भी कुछ अहम सवाल उठाता है। क्या इसका मतलब है कि बुर्का पहनने वाली मुस्लिम औरतें मुम्बई में सार्वजनिक स्थानों पर स्वतंत्र महसूस करती हैं? जैसे सार्वजनिक जगहों

पर लिंग भेद है वैसे क्या यहाँ पर धर्म के आधार पर या फिर जाति के आधार पर भी कोई भेद हैं? कृपा इस प्रयोग को आगे भी अपनाना चाहती हैं।

इन कलाकारों के प्रयोग हमें यह बताते हैं कि किसी जगह के कितने अनदेखे चेहरे हैं। इनमें से कई चेहरे तो मानो कुछ समुदाय, लिंग, जाति या श्रेणी के लोगों की पहुँच से परे ही रखे गए हैं। पर एक शोधकर्ता चित्रकार सोच-समझकर प्रयोगात्मक तरकीबों से शहर के इन अगम्य चेहरों को टटोलने की कोशिश कर सकती है।



चित्र 5 व 6. कृपा द्वारा खींची गई कोलीवाड़ा की तस्वीरें।

मेंढक का पत्र

प्रभात

चित्र: शुभम लखेरा

पुरखों को याद करने वाले दिन
हरी घासों के पीले पड़ने वाला महीना
बारिश ही नहीं हुई जिस साल
प्रिय राना,

मेरे प्यारे छोटे भाई! कैसे हो तुम। उम्मीद है तुम ज़िन्दा होगे। तुम्हें किसी साँप ने नहीं खाया होगा। क्या तुम्हें कोई कुआँ मिला? और क्या तुमने उसमें गिरकर ज़िन्दगी की नई शुरुआत की? मैं यहाँ यही सोचता रहता हूँ तुम्हें क्या ही तो कुआँ मिला होगा। क्योंकि अब तो लोग सीधे बोरवेल करवाते हैं। कोई पुराना टूटा कुआँ कहीं मिला भी होगा तो कहाँ जाकर मिला होगा, मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानता हूँ। मेरे प्यारे भाई मेरे इस पत्र के मिलते ही तुम जवाब लिखने में देरी मत करना। तुम ये समझो कि इस पत्र को भेजने के बाद मैं बस तुम्हारे पत्र के इन्तज़ार में ही बैठा हुआ हूँ।

तुम नहीं जानते मेरे भाई मुझे और तुम्हारी भाभी को, तुम्हारी कितनी याद आती है। तुम्हारी भाभी हमेशा मुझे कोसती है। कहती है, “राना तुमसे छोटे हैं, बड़े होने के नाते तुम्हारा फर्ज बनता था कि तुम कैसे भी करके उसे और उसकी साथिन को अपने साथ लेकर आते।” लेकिन तुम तो जानते हो मेरे भाई मैंने तुम्हें कितना कहा था। कितना मनाया था लेकिन तुम नहीं माने। बल्कि तुम ज़रा-सी भी हाँ कहते तो तुम्हारी साथिन तो हमारे साथ आने के लिए राज़ी ही बैठी थी। वह बेचारी। जिसकी तुम एक नहीं सुनते हो। यह गलत बात है राना। तुम्हें उसकी बात सुननी चाहिए। सोचो

किसी रोज़ गुस्से में वह तुम्हें छोड़कर चली गई तो तुम किसके साथ कीड़े पकड़ने जाया करोगे। किसके साथ बैठकर गलफड़े फुलाकर टर्राया करोगे। अकेले रह जाओगे, अकेले। अरे! हाँ, मैं तो पूछना भूल ही गया, उस बेचारी को कोई साँप तो नहीं खा गया। क्या करें इस संसार में हम कीड़े खाने के लिए हैं और साँप जाति हमें खाने के लिए। कितनी अजीब बात है कि एक-दूसरे को न खाएँ तो ज़िन्दा कैसे रहें। खैर मैं इस पत्र में ऐसी बात क्यों करूँ, जिसे कि मैं अपने भाई के हाल जानने और उसे अपने हाल बताने के लिए लिख रहा हूँ।

प्यारे राना! इस साल तो बारिश ही नहीं हुई। बलरिया गाँव के चरागाह के डबरे के कीचड़ में हमारा कुनबा ऐसे रह रहा था जैसे शहरों में लोग झुग्गी-बस्तियों में रहते हैं। पानी के अभाव ने हमारा जीना मुहाल कर दिया था। सावन-भादो के महीने में कीचड़ भी सूख गया था मेरे भाई, और सबको वहाँ से निकल-निकलकर जाना पड़ा था। पलायन को मजबूर थे सब। मछलियाँ मर गई थीं। बगुले उड़ गए थे। घोंघें जो कि सदा ही अपना घर लिए-लिए घूमते हैं, चले गए थे खेतों की ओर, जो कि और ज़्यादा सूखे थे। हम मेंढकों ने भी सोचा कि यहाँ रहे तो मर जाएँगे। तय किया कि बलरिया से कुछ मील दूर बनास नदी है, वह भी सूखी है लेकिन उसमें जगह-जगह पानी के चहबच्चे होंगे। वहाँ जाकर जान बचाई जा सकती है। सैकड़ों मेंढकों का काफिला चल पड़ा था बनास नदी की ओर। कई दिन और कई रात चलकर हम यहाँ पहुँचे थे। उस सफर की कहानियाँ भी सुनाऊँगा कभी।

यहाँ सभी मेंढकों को कहीं-कहीं पानी वाले गड्ढे मिल गए। दो-दो, चार-चार मेंढक उन गड्ढों में कूद गए। उनमें पहले से रह रहे मेंढकों ने शुरू में कुछ विरोध किया। हमें बाहरी कहा। लेकिन अब सब कुछ ठीकठाक है। वे और हम सब एक जैसे ही तो हैं। पानी के हरेक गड्ढे में एक-एक कछुआ है। वह

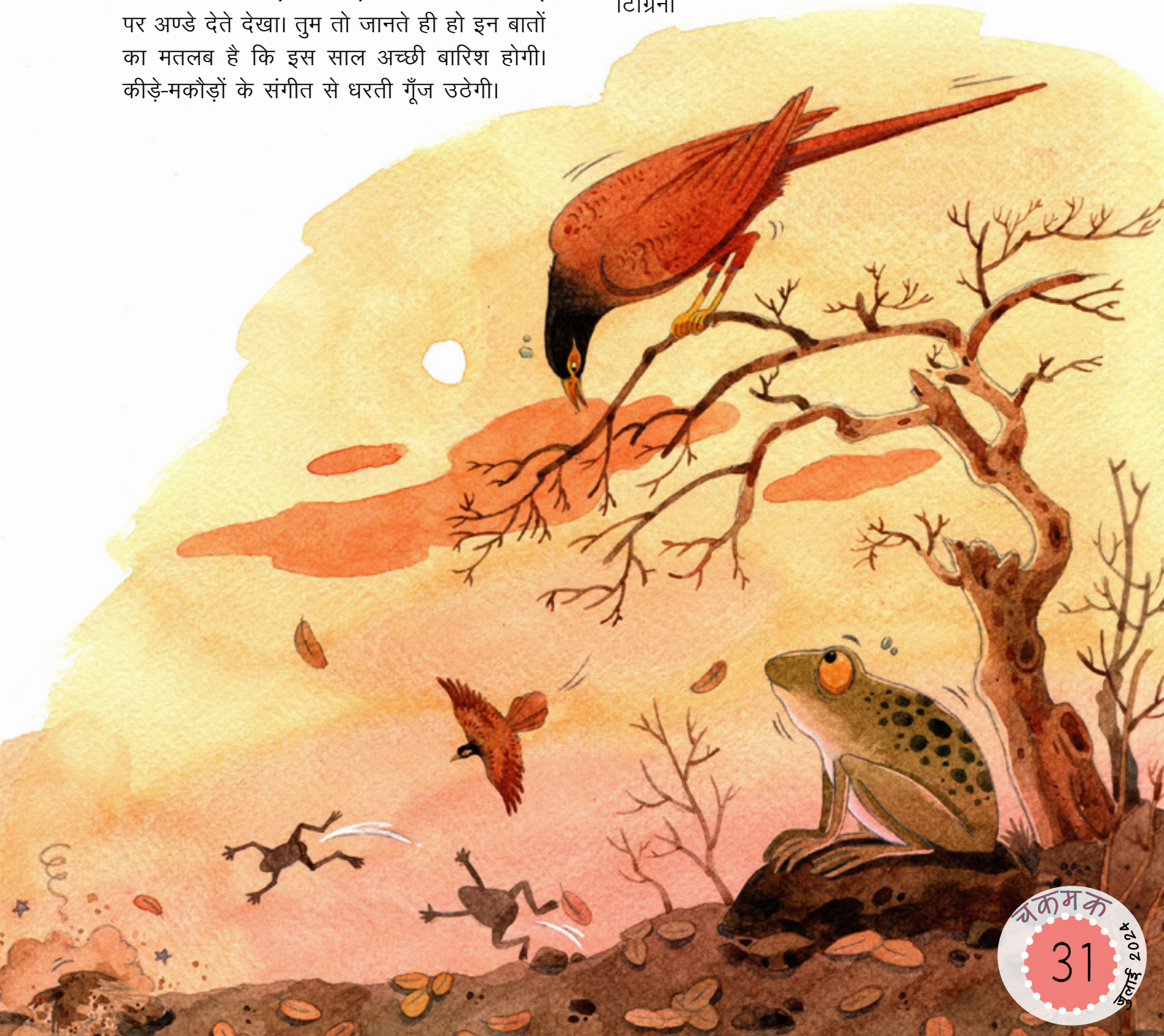
रात के समय किसी चट्टान पर बैठकर कहानियाँ सुनाता है। चाँद के नीचे बैठे हुए सब उसकी कहानियाँ सुनते हैं। सब कह रहा हूँ तो सबका मतलब केवल मेंढक नहीं है। सब मतलब साँप भी, बगुले भी, झींगुर भी, पेड़ों में बैठे उल्लू भी। मुझे तो लगता है तारे तक उसकी कहानी सुनते हैं। मैं कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि हमारा जीवन अच्छा गुज़र रहा है।

एक दिन मैंने सोन चिरेया को नदी की धूल में नहाते देखा। और एक दिन एक टिटहरी को ऊँचाई पर अण्डे देते देखा। तुम तो जानते ही हो इन बातों का मतलब है कि इस साल अच्छी बारिश होगी। कीड़े-मकौड़ों के संगीत से धरती गूँज उठेगी।

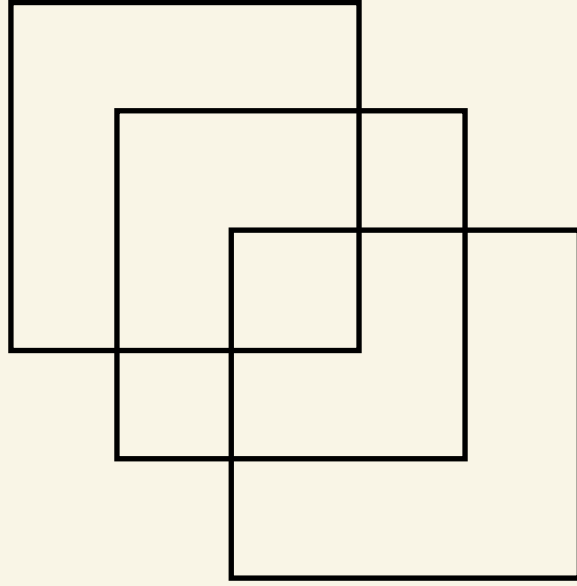
अच्छा मेरे भाई। बातों का तो कोई अन्त नहीं है लेकिन कागज़ की सीमा है। इसलिए बहुत बातें बची होने पर भी किसी कवि की कविता की दो लाइनों के साथ पत्र को समाप्त कर रहा हूँ—

मैंने ये जो पत्र लिखा है
टर टर टर की भाषा में
जल्द जवाब आएगा इसका
बैठा हूँ इस आशा में।

तुम्हारा बड़ा भाई
टिग्रिना



1. तुम्हें दिए गए चित्र को पैन/पेंसिल उठाए बिना बनाना है। इसके लिए तुम्हें पेज मोड़ने जैसी किसी तरकीब की ज़रूरत नहीं है। बस ध्यान रखना कि तुम पहले बनाई किसी भी लाइन को क्रॉस नहीं कर सकते।

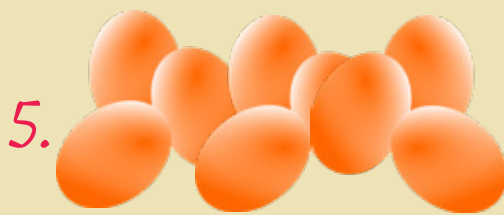


4	5	2
5	5	10
7	3	6
9	3	8
1	1	3

2. दिए गए ब्लॉक्स को इस तरह जमाओ कि तीनों ढेरों के ब्लॉक्स की संख्याओं का जोड़ समान हो। ध्यान रखना कि तुम हरेक ढेर से केवल एक ब्लॉक को शिफ्ट कर सकते हो।

3. मौली कमरे में लगी एक घड़ी की तरफ देख रही है कि जो कि सही समय बता रही है। फिर भी मौली को नहीं पता कि सही समय क्या है। ऐसा क्यों?

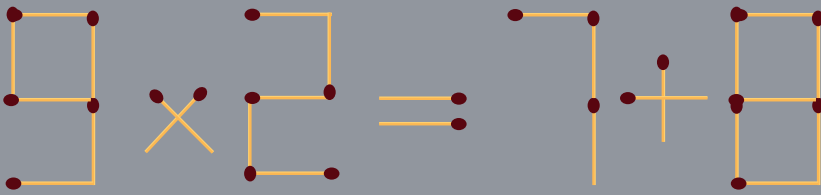
4. दी गई गिड में कई सारे फिल्मी सितारों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?



5. एक दुकानदार के पास 6 टोकरियाँ हैं। 3 टोकरियों में मुर्गियों के और 3 में बत्तख के अण्डे हैं। अण्डों की संख्या है— 5, 6, 12, 14, 23 और 29। “यदि मैं बत्तख के अण्डों की इस टोकरी को बेच दूँ तो मेरे पास बत्तख के अण्डों से दुगुने मुर्गी के अण्डे बचेंगे।” दुकानदार किस टोकरी के बारे में ऐसा सोच रहा था?

श्री	कि	या	रा	भा	ड	वा	णी	स
शा	दे	त	ब्बू	लि	मि	क	ना	ल
हि	ले	वी	प्रि	या	दी	री	पा	मा
द	न	अ	दि	यं	पि	ना	रे	न
का	र्ति	क	क्ष	पा	का	जो	ल	खा
म	र	अ	ज	य	दे	व	ग	न
धु	ण	मि	नु	या	कु	हे	रु	कि
बा	वी	ता	धु	ष्का	ली	मा	धु	री
ला	र	भ	दी	न	पी	जि	र	जा

6. सिर्फ एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को ठीक करना है। कैसे करोगे?



7. तीन दोस्त घूमने जा रहे थे। एक का नाम था हिन्दी, दूसरे का इंग्लिश और तीसरे का नाम था गणित। रास्ते में उनका एक्सीडेंट हो गया। हिन्दी चिल्लाया, “बचाओ-बचाओ”। इंग्लिश बोला, “हेल्प-हेल्प”। तो बताओ गणित क्या बोलेगा? सोचो-सोचो...

(यह सवाल मध्य प्रदेश के रायसेन ज़िले के ग्राम बाँसकुंवर में चौथी व पाँचवीं में पढ़ने वाली जीनत और ज़ोया ने भेजा है। साभार: गुप्तगुरू लारी प्रोजेक्ट, एकलव्य फाउंडेशन)

8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग पत्ती आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी पत्ती आएगी?



माथा पच्ची

फटाफट बताओ

यदि तुम्हारे मामा की बहन तुम्हारी मौसी नहीं हैं, तो फिर कौन है?

(आम)

कौन-सा बैग है जो केवल भीगने पर ही काम आता है?

(आई-ई)

एक पैर है काली धोती जाड़े में वह हरदम सोती गरमी में है छाया देती बारिश में वह हरदम रोती

(फ्रिज)

कौन-सी चीज़ है जिसे जितना साफ करो, वह उतना ही काला होता जाता है?

(डेब्रिकॉफ़)

एक नाड़ा, दो लहँगा पहने ऊपर काँटा, नीचे तीन चेनें

(छाफ़)

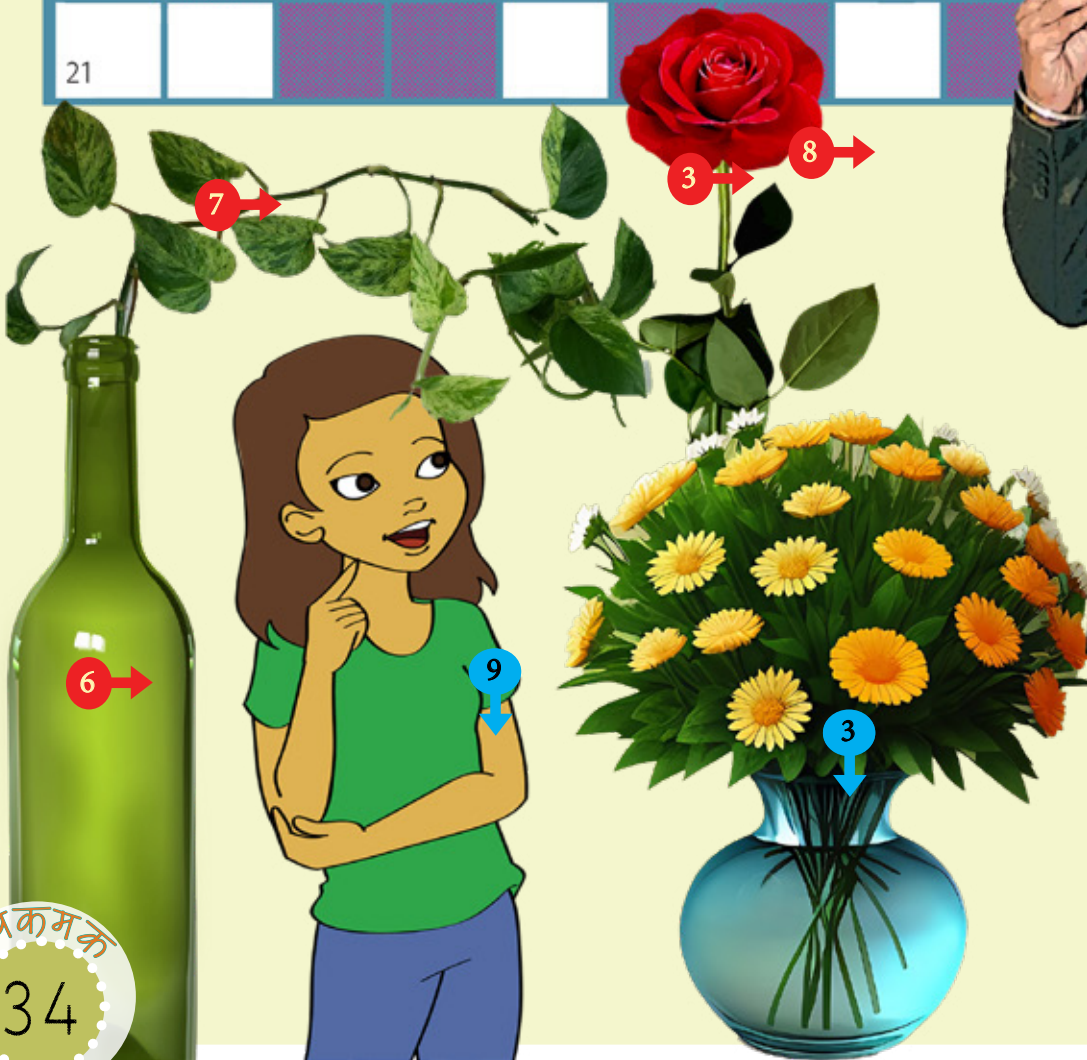
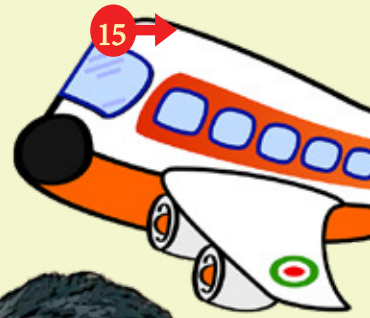
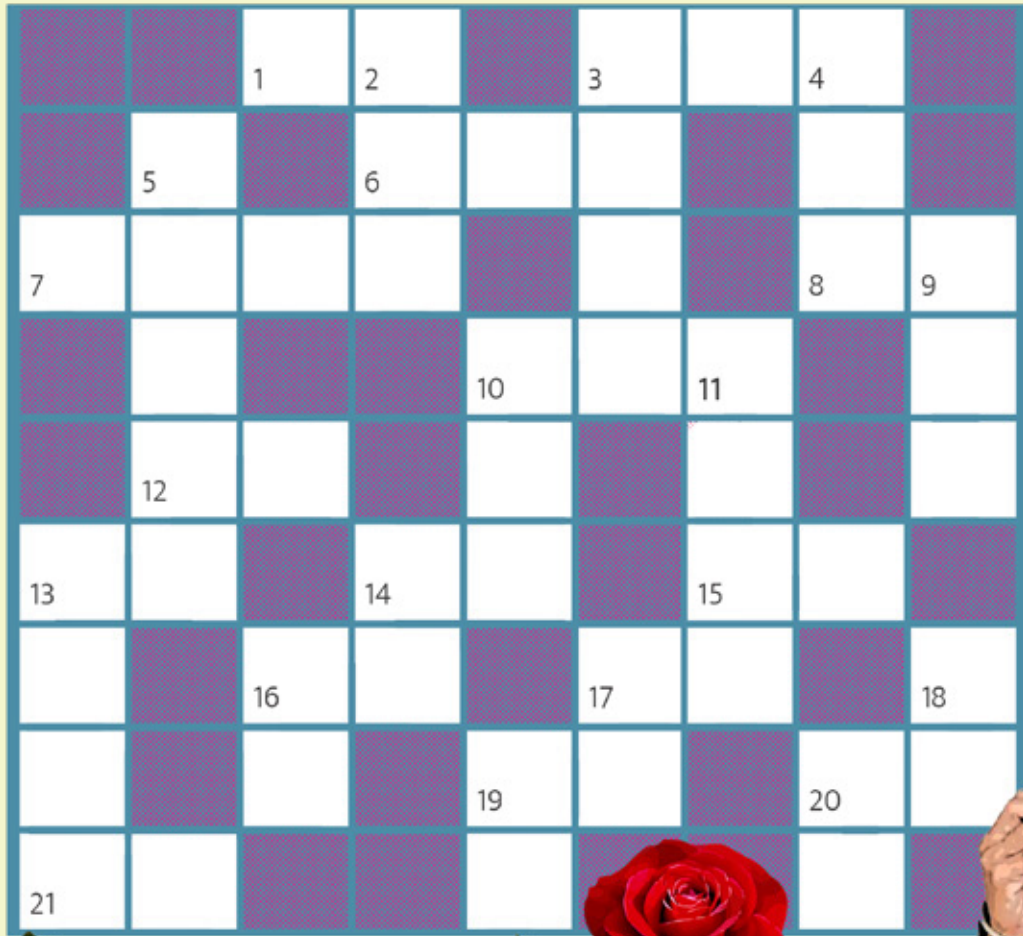
नहलाया-धुलाया

घूँसा मारकर सुलाया

(आश्चर्य आह)

अन्तिम तीन पहेलियाँ मध्य प्रदेश, भोपाल, बंगरसिया के ग्राम मुण्डला के चकमक क्लब से दिव्या विश्वकर्मा ने भेजी हैं।

जवाब पेज 42 पर



दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

सुडोकू 77

6						8	4	
8	3		4		5	2		9
	2	4	6	3				
7	8		5		4	1	3	
	6				3	4		
2	4	3		8		9		
			8	5		3	9	
	9				6	5	2	4
	5			4	9		7	

चित्र पहेली





भूत

नभ्या
सातवीं, कम्पोजिट स्कूल
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा भूत
बड़ा ही क्यूट
रोज़ रात को आता है
सबको बहुत डराता है

चित्र: तेजस्वनी राजपूत, तीसरी, मदर्स
इंटरनेशनल स्कूल, हौज़ खास, दिल्ली

ननिहाल में मस्ती

सरूपी
छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान

एक बार मैं ननिहाल में थी। हम सब बच्चे खेल रहे थे। तभी एक पानीपूरी वाला आ गया। तो सारे बच्चे अपने घर से पैसे लेकर आए। सबने पानीपूरी वाले के ठेले पर ही पानीपूरी खा ली। मैंने दस रुपए की पानीपूरी एक पॉलीथीन में पैक करवाई। फिर जब सारे बच्चे खेल रहे थे तो मैं चेयर पर बैठकर पानीपूरी खा रही थी। और उनको चिढ़ा रही थी कि लो ठेंगा।





मूनलैंड की सैर

चित्र व लेख: प्रकेत भावसार

सातवीं 'अ', केन्द्रीय विद्यालय, खरगोन, मध्य प्रदेश

हम सुबह 6 बजे ही मूनलैंड के सफर के लिए निकल गए। हमने सफर के लिए बहुत सारे गर्म कपड़े रख लिए थे क्योंकि सुबह निकलते वक्त इतनी ठण्ड थी कि मैं तो नहाने की हिम्मत भी नहीं कर पाया। यात्रा की शुरुआत में तो डर लगा। पर बाद में हम सोचते जा रहे हैं थे कि मूनलैंड कैसा दिखता होगा, वहाँ पर पेड़-पौधे, जानवर और इन्सान कैसे रहते होंगे।

दोपहर में 3 बजे हम मूनलैंड पहुँच गए। वहाँ पहुँचते ही हमें बहुत सारे भूरे, हल्के लाल और पीले रंग की बारीक मिट्टी और अलग-अलग पत्थरों से बने पहाड़ दिखे। कुछ पहाड़ों पर बर्फ भी थी। थोड़ा आगे जाने पर

हमें कुछ घर भी दिखे। यह घर अलग ही तरीके के थे। घर का कुछ हिस्सा जमीन के अन्दर था और कुछ ऊपर। वहाँ अलग-अलग तरीके के पहाड़ देखकर हमको मज़ा आ रहा था। ऐसा लग रहा था कि हम किसी अलग दुनिया में पहुँच गए हैं।

यह मूनलैंड चन्द्रमा का नहीं, धरती का ही हिस्सा था। हमारे देश के लद्दाख में सूखे पहाड़ों वाले भाग को मूनलैंड कहते हैं। यहाँ से होते हुए हम फिर लेह पहुँच गए। हमें इस यात्रा में बहुत मज़ा आया। और हाँ, जब पृथ्वी से चन्द्रमा की रॉकेट सेवा शुरू होगी तब भी मैं मूनलैंड जाकर देखूँगा कि असली मूनलैंड कैसा होता है।

बातें बड़ों की

सलीम काजले
आठवीं, एकलव्य लर्निंग
सेंटर, ग्राम मांदीखोह
केसला, नर्मदापुरम, मध्य
प्रदेश

मेरा नाम सलीम है। मैं अपने नाना-नानी के घर रहता हूँ। अभी हमारे यहाँ तेंदूपत्ता टूट रहा है और शादी भी चल रही हैं। हमारे घर से भी मम्मी पत्ता तोड़ने जाती हैं। और चाची, दाऊ और बाई भी जाते हैं। जब वो लोग पत्ता तोड़कर लाते हैं तो हम सब घरवाले यानी छोटे से बड़े सभी पत्ता बाँधने के लिए एक जगह जुटते हैं। जब पत्ता बाँधते हैं तो कोई बाँधने का काम करता है, तो कोई 25-25 पत्ती गिनकर उन्हें जमाकर रखता है।

जब सब एक जगह होते हैं तो बहुत सारी बातें करते हैं। जैसे कि हमारे समय में शादी 6-7 दिन तक रहती थी। हम बैलगाड़ी से बारात ले जाते थे। बैलगाड़ी को अच्छे-से सजाते थे। ऐसी बहुत सारी बातें बताते थे जो उनके समय में हुआ करती थीं। हर दिन एक नई बात उनसे जानने को मिलती थी।



चित्र: शर्वरी दलवी, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चोरी की कहानी

यामीन खान

पाँचवीं, गुप्तगू, लारी प्रोजेक्ट, एकलव्य फाउंडेशन
ग्राम दिवटीया, रायसेन, मध्य प्रदेश

मैं और मेरा भाई हम दोनों बाँयागाँव गए थे। तब आम का सीजन चल रहा था। एक पड़ोसी के घर बहुत सारे आम के पेड़ थे। उस पेड़ में बहुत सारे कच्चे आम लगे हुए थे। फिर हमारा मन हुआ कि क्यों ना हम चोरी करें।

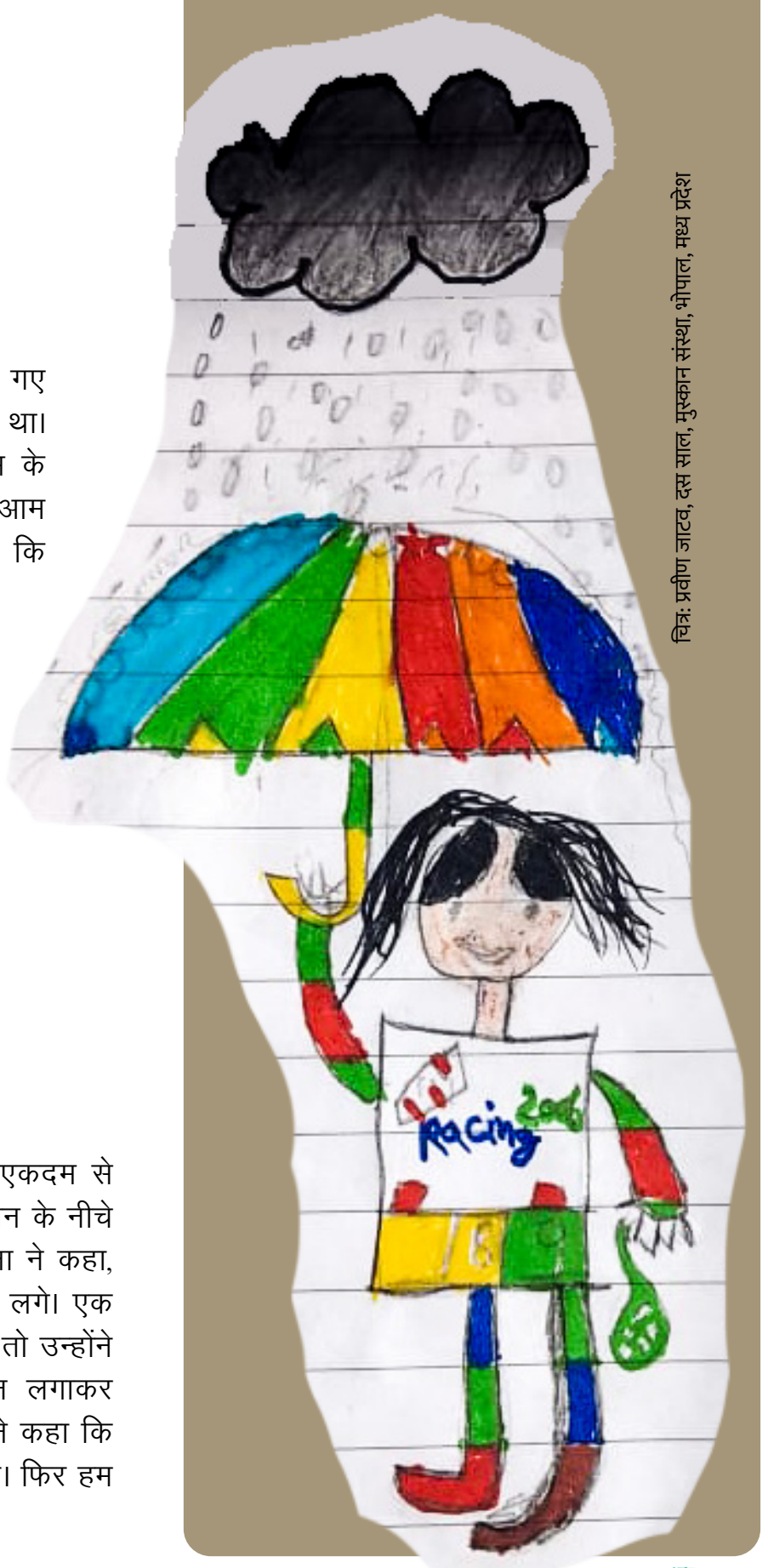
हमने देखा कि उस घर के लोग कमरे में थे। तो तब तक हम फटाफट आम तोड़कर वहाँ से भाग गए। फिर हमारी दादी की छत पर जाकर हमने आम खाए।

तेज़ बारिश

सुमेन

मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

एक दिन हम बीनने गए थे। तभी एकदम से तेज़ बारिश होने लगी। हम लोग दुकान के नीचे जाकर खड़े हो गए। आयुष और मीना ने कहा, “हम तो नहाएँगे।” फिर दोनों नहाने लगे। एक अंकल ने देखा कि बच्चे नहा रहे हैं। तो उन्होंने डेटॉल साबुन दे दिया। फिर साबुन लगाकर नहाने लगे। फिर दुकानवाले अंकल ने कहा कि बारिश कम हो गई है। घर चले जाओ। फिर हम लोग घर चले गए।



चित्र: प्रवीण जाटव, दस साल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

कमक

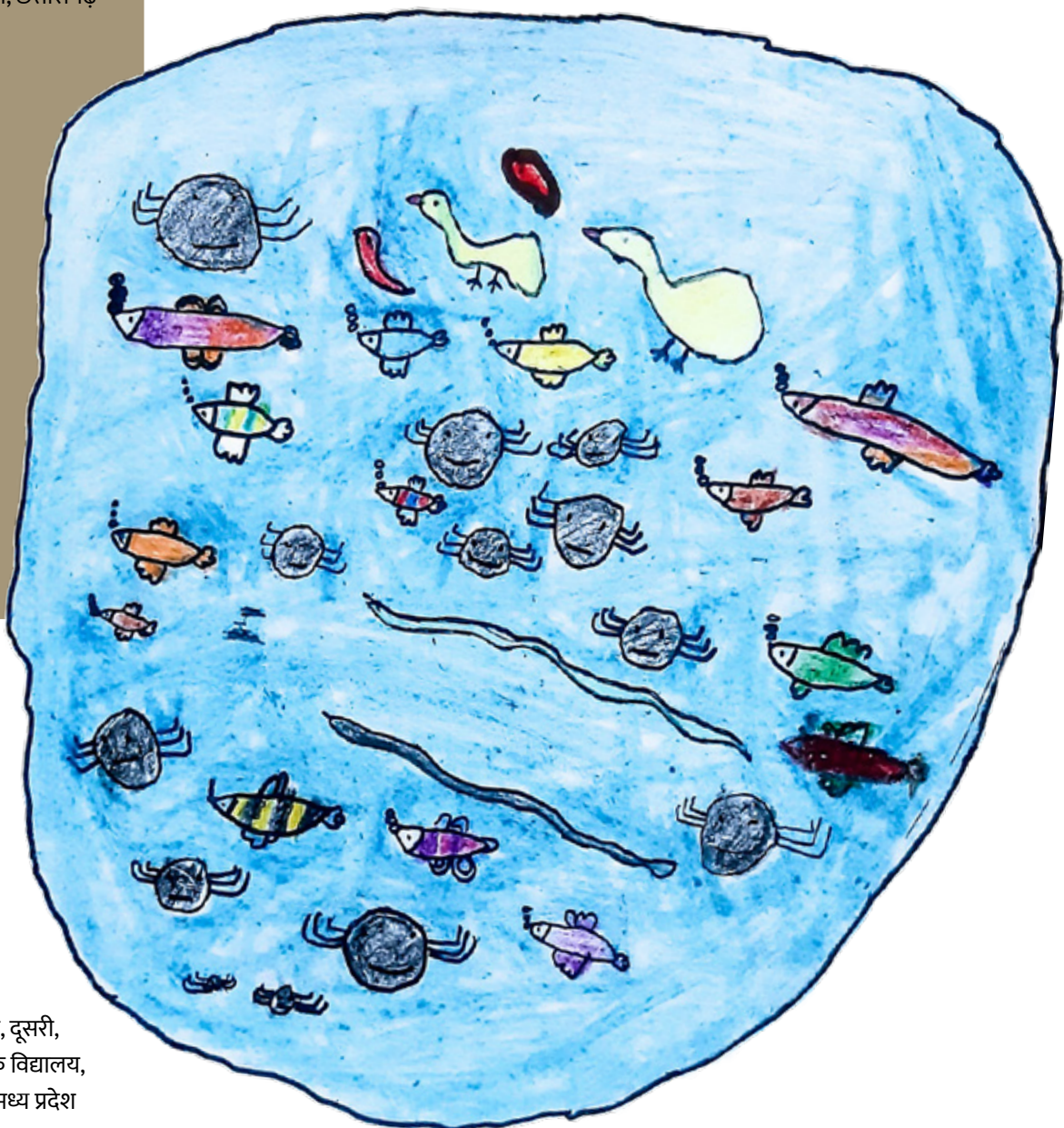
39

जुलाई 2014

हमारे गाँव का तालाब

अमिस्ता केरकेट्टा
पाँचवीं, प्राथमिक शाला
कन्या आश्रम, सीतापुर
सरगुजा, छत्तीसगढ़

हमारे गाँव में बहुत-से तालाब हैं। मुझे तालाब में तैरना पसन्द है। हम तालाब में नहाने भी जाते हैं। एक बार मैं तालाब में नहाने गई थी तो मैं तालाब में गिर ही गई थी। मेरे दोस्त हँस रहे थे। मुझे भी बहुत हँसी आ रही थी। एक दिन वहाँ एक लोमड़ी पानी पीने आई थी। मुझे देखकर वो भाग गई। मैंने लोमड़ी को पहली बार देखा था। फिर मेरी दोस्त बोली, “चलो नहाते हैं।” मैंने कहा, “ठीक है।” फिर हम नहाकर घर आ गए।



चित्र: मेघा मकवाने, दूसरी,
शासकीय प्राथमिक विद्यालय,
झिरन्या, खरगोन, मध्य प्रदेश

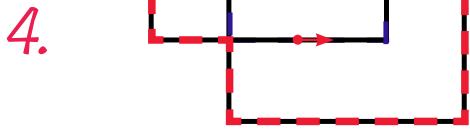
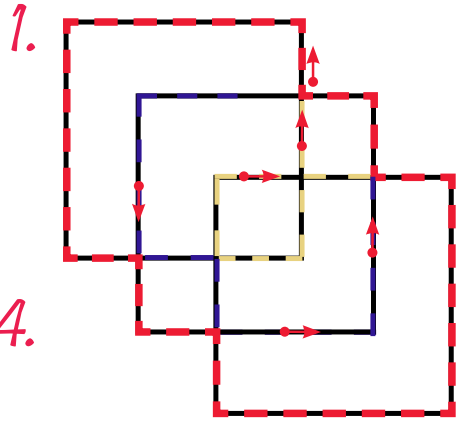


कहानी दो बहनों की

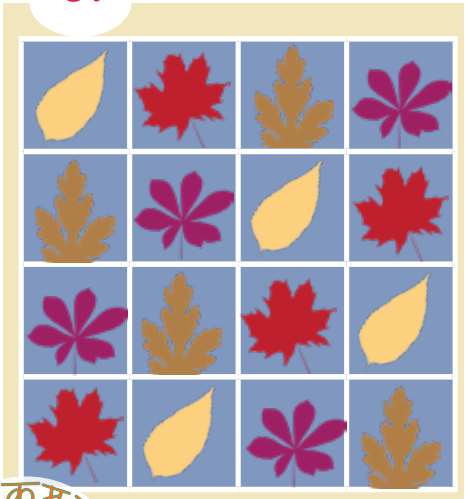
मध्य प्रदेश के धार जिले के शासकीय माध्यमिक स्कूल, गुलझरा के तीसरी से सातवीं कक्षा के बच्चों द्वारा रची गई कहानी।

एक गाँव था। उस गाँव का नाम जयपुर था। वह गाँव राजस्थान में बसा था। उसी गाँव में सोनिया और साजना नाम की दो बहनें रहती थीं। एक दिन दोनों बहनों को बहुत गर्मी लग रही थी। वहाँ पास में आम का पेड़ था। दोनों बहनें आम के पेड़ के नीचे बैठी बोर हो रही थीं। तभी उनके सामने एक आम आकर गिरा। सोनिया बैठी रही। साजना आम उठाकर ले आई और खाने लगी।

आम पका था। उसकी खुशबू बहुत अच्छी थी। सोनिया बोली, “आम मुझे भी दो।” पर साजना ने नहीं दिया और कहा, “वहाँ देखो, दो आम नीचे गिरे हैं। उठाकर ले आओ।” पर सोनिया नहीं जाती है और कहती है, “मैं बड़ी हूँ। तुम जाकर मेरे लिए आम ले आओ।” साजना आम उठाने नहीं गई और सोनिया आम उठाकर ले आती है। और दोनों बहनें खुशी से घर चली जाती हैं।



8.



2. तीसरे ढेर से संख्या 10 वाले ब्लॉक को बीच वाले ढेर में रखो। बीच वाले ढेर से संख्या 3 वाले ब्लॉक को पहले ढेर में रखो। फिर पहले ढेर से संख्या 5 वाले ब्लॉक को ढेर 3 में रखो। अब सभी ढेरों में संख्याओं का जोड़ 24 होगा।

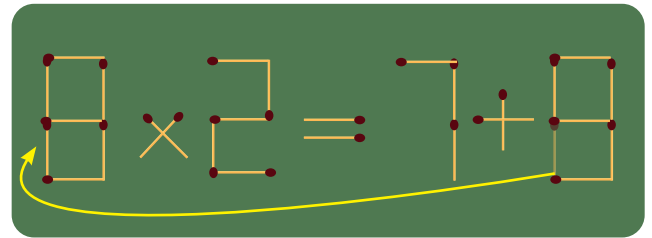
4	5	2
3	5	5
7	3	6
9	10	8
1	1	3

3. क्योंकि कमरे में लगी सभी घड़ियाँ अलग-अलग समय बता रही थीं।

5. 29 अण्डों वाली टोकरी। 23, 12 और 5 अण्डों वाली टोकरियों में मुर्गी के अण्डे थे और 14 व 6 वाली टोकरियों में बत्तखों के। 29 अण्डों वाली टोकरी को बेचने पर मुर्गियों के कुल अण्डे बचेंगे:

$$23+12+5 = 40 \text{ और बत्तखों के } 14+6= 20$$

6.



7. 108 (एम्बुलेंस का नम्बर)

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

		1 ही	2 रो		3 गु	ला	4 ब	
	5 सु		6 बो	त	ल		मु	
7 म	दी	पला	ट		द		8 ला	9 ल
	ल			10 द	सा	11 रो		ड
	12 रो	र		का		म		की
13 प	ही		14 गु	ई		15 पले	न	
त		16 कै	बो		17 बो	ट		18 न
लू		ही	19 पै	न		20 प	सं	
21 न	ली		सा				वी	

सुडोकू-77 का जवाब

6	1	5	9	2	7	8	4	3
8	3	7	4	1	5	2	6	9
9	2	4	6	3	8	7	1	5
7	8	9	5	6	4	1	3	2
5	6	1	2	9	3	4	8	7
2	4	3	7	8	1	9	5	6
4	7	6	8	5	2	3	9	1
1	9	8	3	7	6	5	2	4
3	5	2	1	4	9	6	7	8

तुम भी जानो

प्लास्टिक की पूरी रीसाइक्लिंग



कुछ समय पहले तक हम प्लास्टिक की ज़्यादातर मेकेनिकल रीसाइक्लिंग ही करते थे। रीसाइक्लिंग यानी प्लास्टिक कचरे को छाँटना, पीसना और उसका प्लास्टिक की चीज़ें बनाने में इस्तेमाल करना। पर इसमें कुछ दिक्कतें हैं खासकर इसलिए कि प्लास्टिक में मिलाए गए रसायन जैसे कि रंग हटाए नहीं जा सकते। यानी कि ये रीसाइकिल हुआ प्लास्टिक खाने की चीज़ें रखने के लिए सुरक्षित नहीं है। यह कमज़ोर हो सकता है और सभी किस्म के प्लास्टिक को इस तरह बदला भी नहीं जा सकता।

अब रीसाइक्लिंग की नई टेक्नोलॉजी आई है। इसका आधार है यह अवधारणा कि प्लास्टिक कचरे को पूरी तरह इस तरह बदला जाए कि उससे बने पदार्थ के कण नए (वर्जिन) प्लास्टिक बना सकें। इस टेक्नोलॉजी में कई कम्पनियाँ काम कर रही हैं। उम्मीद है कि इससे पर्यावरण का कम शोषण होगा और हम प्लास्टिक का व्यापक इस्तेमाल भी करते रह पाएँगे।

अन्तरिक्ष में कहीं अन्य जगह पर भी जीव होंगे, इसकी सम्भावना शून्य नहीं है। इसलिए जब भी पृथ्वी जैसे इन पथरीले ग्रहों की खोज होती है तो टेलिस्कोप के ज़रिए जीवों की तलाश होती है। अभी तक हम सोचते थे कि चूँकि पृथ्वी पर जीव अपना पोषण हरे क्लोरोफिल द्वारा बनाते हैं तो अन्य ग्रहों के जीवों में भी क्लोरोफिल का हरा रंग पाया जाएगा।

पर हाल ही में पता चला है कि कुछ ऐसे सूक्ष्मजीव हैं जो सूरज की किरणों का इस्तेमाल करते हैं और बैंगनी रंग के हो सकते हैं। तो अब अन्तरिक्ष में जीवन के संकेत खोजने के लिए वैज्ञानिकों को हरे ही नहीं बैंगनी रंग के लिए भी सतर्क रहना होगा।

अन्य ग्रह जीवों
से हरे-भरे
नहीं बैंगनी हो
सकते हैं





आम बने मेरे खास!



ये हैं मेरी पसन्द के
सीरियल— इन्हें तो
मैं एक के बाद एक
देखता रह सकता हूँ।



रोहन चक्रवर्ती
अनुवाद: विनता विश्वनाथन